कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवशक्ति बक्सी

संपादक मंडल

सत्यपाल
संजीव कुमार सिन्हा

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

InL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QDI : +91(11) 23387887

पता : डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003

ई–मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डॉ. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी–36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली–55 से मुद्रित करा के, डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी–66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली–110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक – प्रभात झा

विषय–सूची

इन्दौर (म.प्र.) में 2 मई को आयोजित महापौर, नगर पालिका अध्यक्ष एवं नगर पंचायत अध्यक्षों की बैठक का उद्घाटन करते भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी।

महापौर, न.पा. अध्यक्ष एवं नगर पंचायत अध्यक्षों की बैठक (इन्दौर)
एक रिपोर्ट..... 7

संसद में बहस

राजयसभा
अरुण जेटली..... 9
वेंकैया नायडू, प्रकाश जावडेकर..... 11
स्मृति ईरानी..... 14
प्रभात झा..... 19

लोकसभा
डॉ. मुरली मनोहर जोशी..... 12

लेख
भारत के लिए चेतावनी भरे शब्द
&ykyÑ".k vkMok.kh..... 20
संप्रग–II के तीन साल : घोटालों से जनता बेहाल
&Mk- f'ko 'kfDr cDlh..... 22

अन्य
गुजरात : वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किसानों से बातचीत. 8
भाजपा महिला मोर्चा राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक..... 18
पंजाब : भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी बैठक..... 26
दिल्ली : बुनकर महासम्मेलन..... 28
हिमाचल : 'अटल स्कूल यूनीफॉर्म योजना' का शुभारम्भ..... 29
बिहार : भाजपा प्रदेश कार्यसमिति बैठक..... 30

अफ्रयात्म

गंगा

गायत्री की भांति गंगा का रहस्य भी बड़ा गंभीर है। मूलरूप में गंगा और गायत्री एक ही है। जितना क्षेत्र गायत्री का है उतनी ही गंगा का। इसी भाव को स्पष्ट करने के लिए गंगा की तीन फ्रारायें मानी गयी हैं– पातालगंगा, भागीरथी गंगा और आकाशगंगा। पृथ्वीतद्भव से जो शक्ति प्राप्य है, वह पातालगंगा है, जलीयतद्भव से वही शक्ति भागीरथी है और तेजतद्भव से वही आकाशगंगा है। जिस प्रकार गायत्री त्रिपक्ष है, उसी प्रकार गंगा भी त्रिफ्रारा है। ऋग्वेद में आप को अन्तरिक्ष का देवता कहा गया है और चार सूत्रों में इस दिव्यदेवता की स्तुति की गयी है। अग्नि अथवा तेजतद्भव जल में रहने वाला है। अग्नि का जन्म ही जल से बताया गया है। जल का मूलतद्भव पार्थिव है। जो 'भेषजमय' है और जिससे मनुष्य को जीविका भी प्राप्त होती है। इस प्रकार 'आपः' के तीन रूप हो जाते हैं। यही गंगा के तीन रूप हैं।

यद्यपि वेदों में गंगा के अतिरिक्त अन्य नदियों का भी वर्णन है– जैसे सिन्फ्रु, सरस्वती आदि किन्तु भारतीय संसंति में गंगा का विशेष महत्व है। इसका रहस्य उक्त नदियों और गंगा के उद्गम और वेद में प्राप्त उनके वर्णन से विदित हो सकता है।

–योगीराज श्रीदेवराहा बाबा

व्यंग्य चित्र

हमें लिखें...

सम्पादक के नाम पत्र

कमल संदेश

सादर आमंत्रित

आपकी राय एवं विचार

सम्पादक,
कमल संदेश
डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पीपी-66
सुब्रह्मण्य भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003
ई-मेल:
kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रिय पाठकगण

कमल संदेश (पाक्षिक) का अंक आपको निरन्तर मिल रहा होगा। यदि किन्हीं कारणवश आपको कोई अंक प्राप्त न हो रहा हो तो आप अपने प्रदेश कार्यालय को या हमें अवश्य सूचित करें।

-सम्पादक

पंगु बन चुकी है संप्रग सरकार

dk ग्रेस–नीत यूपीए–II अपने शासनकाल के तीन वर्ष पूरे कर रही है। लोगों को उसके यह तीन वर्ष अत्यंत महंगे पड़ रहे हैं और अब वे इस सरकार से छुटकारा पाना चाहते हैं। जहां एक तरफ प्रधानमंत्री आंखों से ओझल रहते हैं तो दूसरी तरफ यूपीए की चेयरपर्सन श्रीमती सोनिया गांधी ने चुप्पी साध रखने की जैसे कसम खा ली हो। इस सरकार का कोई भी व्यक्ति अपनी भूल–चूक या गड़बड़झाले की जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है। क्या प्रधानमंत्री या फिर कोई अन्य व्यक्ति जिम्मेदारी लेने को तैयार है? इसका सीधा सा उत्तर है– कोई नहीं! मंत्रियों का हाल यह है कि वे अपने–अपने एजेण्डा या यूं कहें कि अपने स्वार्थों को साधने में व्यस्त हैं, तो सहयोगी दलों के साथियों को शिकायत रहती है कि उनकी बात सुनी ही नहीं जाती, नतीजतन सरकारी कामकाज बुरी तरह से प्रभावित होता है और भ्रष्टाचार के आरोपों को हवा में उड़ा दिया जाता है। ऐसी स्थितियों से गवर्नेंस बुरी तरह से क्षत–विक्षत होती है जिसकी कीमत लोगों को अपने हर रोजमर्रा के जीवन में कष्ट भोग कर चुकानी पड़ती है।

सत्ता में रहते अपने तीन वर्षों के कार्यकाल में कांग्रेस–नीत संप्रग पूरी तरह से लोगों के सामने बेनकाब हो चुकी है। आज कांग्रेस की विश्वसनीयता अधरतम स्थिति तक जा पहुंची है, लोगों का उस पर से विश्वास पूरी तरह से समाप्त हो चुका है। उत्तर प्रदेश के चुनावों में साम्प्रदायिक आधार पर लोगों को बांटने का उसका प्रयास उसकी चुनावी नियति को बदलने में विफल हो चुका है। अल्पसंख्यक आरक्षण के उसके सारे के सारे वायदे और चुनाव आयोगों के निर्देशों की धज्जियां उड़ाते उसके मंत्रियों द्वारा गैर–जिम्मेदाराना बयान भी चुनावों में सफलता नहीं दिला पाए। गोवा में, अल्पसंख्यक मतदाताओं ने कांग्रेस को धता बता दी, पंजाब में भाजपा–अकाली दल गठबंधन को पसंद किया गया। उत्तराखण्ड में, जहां उसकी सरकार गलती से सत्ता में बैठ गई है, उसके चलने की आशंका भी कम ही दिखाई पड़ती है। दिल्ली नगर निगम को तीन हिस्सों में बांटने की उसकी योजना भी विफल हो गई जिसके पीछे एक ही मंशा थी कि किसी तरह से चुनाव जीता जाए। नव–निर्मित तीनों निगमों पर आज भाजपा के मेयर प्रतिष्ठित हो चुके हैं। इससे पहले महाराष्ट्र के मतदाताओं ने भी राज्यभर में निगम चुनावों में कांग्रेस को करारी मात दी और भाजपा–शिवसेना गठबंधन को सत्ता में बिठाया। आज कांग्रेस पूरे देश में हताश हो चुकी है और जानती है कि इसे लोगों ने खारिज कर दिया है। अब वह अपने झूठे वायदों और विभाजनकारी राजनीति के अपने दूषित प्रचार से मतदाताओं को बेवकूफ बनाने के काबिल भी नहीं रह गई है।

पिछले तीन वर्षों में स्थिति बद से बदतर होती चली गई है। संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन ने देश को परम अधम गति तक पहुंचा दिया है। यह वह सरकार है जिसका भ्रष्टाचार और बेलगाम महंगाई की मार में ढूंढे से भी जवाब नहीं मिलता है। यह वह सरकार है जिसने सीडब्ल्यूजी, 2जी, इसरो–देवास सौदे, कोयला ब्लॉक, आदर्श सोसाइटी और न जाने कितने घोटालों की जांच रोकने का काम धड़ल्ले से किया। इसी कारण, सुप्रीम कोर्ट को कई घोटालों पर जांच के आदेश जारी करने पड़े। यह वह सरकार है जिसे घोटालेबाजों और अपराधियों को बचाने में जरा भी शर्म नहीं आती।

कालेधन को देश में वापस लाने और लोकपाल नियुक्त करने जैसे मामलों में छिड़े अभियानों पर हर तरह का रोड़ा अटकाने में भी उसे जरा संकोच नहीं होता है। संप्रग शासन में देश अत्यंत कठिनाई में पड़ा है, न आगे बढ़ पा रहा है और न ही विश्व के अन्य देशों के साथ मुकाबला कर पा रहा है। कोई विज़न नहीं, कोई योजना नहीं और समय के अनुसार आगे बढ़ने की चाह तक भी नहीं। कांग्रेस–नीत संप्रग अगर किसी काम में मशगूल है तो इतना ही कि वह घोटालेबाजों,

भ्रष्टाचारियों, मुनाफाखोरों और काला–बाजारियों के साथ है और उन्हें ही संरक्षण देती है। वह तो भ्रष्टाचार और घोटालों का पर्याय बन कर रह गई है। उसके पास तो एक सुन्दर भविष्य बनाने, विदेश, आर्थिक या घरेलू नीतियों पर विचार करने तक का समय नहीं है। यह ऐसी सरकार है जिसकी 'नीतियों को लकवा' मार गया है, पूरी तरह से पंगु बनकर रह गई है।

अब समय आ गया है कि देश को कांग्रेस–नीत संप्रग सरकार के शिकंजे से छुड़ाया जाए। देश आगे बढ़ना चाहता है, वह विश्व के राष्ट्र समुदाय में अपना समुचित स्थान बनाना चाहता है, परन्तु कांग्रेस–नीत संप्रग देश के लोगों की आकांक्षा समझना ही नहीं चाहती है। लोग इस सरकार के खिलाफ लगातार मत दिए चले जा रहे हैं, वे चाहते हैं कि यह गठबंधन सत्ता से बाहर हो। अब हर व्यक्ति महसूस करता है कि देश ऐसे नेतृत्व के सत्ता में रहते आगे नहीं बढ़ सकता है, जिसके पास नेतृत्व की क्षमता ही न हो। लोग भारतीय जनता पार्टी की और गहरी उम्मीदों और आकांक्षाओं से निहार रहे हैं। वे समझते हैं कि देश का भविष्य भाजपा के हाथों में है। भाजपा को उनकी उम्मीदों पर खरा उतरना होगा। भाजपा–शासित राज्य सुशासन और विकास के उज्ज्वल उदाहरण के रूप में काम कर रहे हैं, यह लोगों ने देख लिया है। अब भाजपा को फिर से केन्द्र में अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभाने के लिए तैयार करना होगा। इसके लिए उन्हें कड़ी मेहनत करनी होगी, लोगों के साथ जुड़ना होगा और राष्ट्र निर्माण के कार्यों में लगना होगा। भाजपा नेतृत्व और कार्यकर्ताओं को संकल्प लेना होगा कि वे आम आदमी के आंसुओं को पोंछकर रहेंगे और पूर्ण निश्चय तथा दृढ़ राजनैतिक इच्छा रख कर देश को प्रगति की राह पर ले जाएंगे। ■

भाजपा ने लहराया दिल्ली नगर निगम के नवगठित तीनों नगर निगमों पर अपना परचम

उत्तरी दिल्ली नगर निगम की महापौर बनीं मीरा अग्रवाल

गत 1 मई 2012 को भारतीय जनता पार्टी की मीरा अग्रवाल को उत्तरी दिल्ली की महापौर और मा.आजाद सिंह को उप–महापौर के लिए चुन लिया गया। इसके अलावा स्थाई समिति के अध्यक्ष के लिए योगेंद्र चंदोलिया, उपाध्यक्ष के लिए विजय प्रकाश पाण्डे, श्रीमती हूर बानो, श्रीमती सुरेंद्रकौर के अलावा स्थाई समिति के लिए चुने गए 6 सदस्यों में कांग्रेस के मुकेश गोयल व पृथ्वीराज राठौर भी शामिल हैं। इससे पूर्व उत्तरी निगम के लिए चुने गए सभी 104 पार्षदों ने सिविक सेंटर में शपथ ली। भाजपा के पास उत्तरी दिल्ली नगर निगम में पूर्ण बहुमत है। यहाँ की 104 सीटों में से 59 सीटों पर भाजपा के प्रत्याशी चुनकर आए हैं।

सविता गुप्ता बनीं दक्षिणी दिल्ली नगर निगम की महापौर

गत 2 मई को दक्षिणी दिल्ली नगर निगम में भाजपा प्रत्याशी सविता गुप्ता अपनी विरोधी एनसीपी प्रत्याशी फूलकली को 20 मतों से हरा कर महापौर पद पर विजयी हुई। इस चुनाव में सविता गुप्ता को 66 वोट मिले जबकि फूलकली को 46 वोट मिले। गौरतलब है कि इस निगम में भाजपा के पास 44, कांग्रेस के पास 29, एन.सी.पी. के पास 6, बी.एस.पी. के पास 5, निर्दलियों के पास 14 तथा इ.ने.लो. के पास 3 सीटें थी इसके अलावा जदयू व राष्ट्रीय लोकदल व समाजवादी पार्टी के पास एक–एक सीटें थी।

पूर्वी दिल्ली नगर निगम की महापौर बनीं अन्नपूर्णा मिश्रा

भारतीय जनता पार्टी से दो बार पार्षद चुनी गईं अन्नपूर्णा मिश्रा को 1 मई को सर्वसम्मति से पूर्वी दिल्ली नगर निगम का महापौर चुना गया। भाजपा की ही उषा शास्त्री को उप महापौर के पद के लिए चुना गया। हाल ही में हुए पूर्वी दिल्ली नगर निगम चुनावों में भाजपा के चार और कांग्रेस के दो प्रत्याशी निर्विरोध स्थाई समिति के लिए चुने गए। निकाय चुनाव में अन्नपूर्णा ने सोनिया विहार सीट से, जबकि उषा ने करावल नगर सीट से जीत दर्ज की है। स्थाई समिति के लिए निर्विरोध चुने गए भाजपा पार्षद हैं महक सिंह, ब्रह्मपुरी, लता गुप्ता, पांडव नगर, संजय कौशिक, जीवनपुर, और राजकुमार ढिल्लन कल्याणपुरी, कांग्रेस से सविता शर्मा, सुभाष मोहल्ला, और वरियम कौर, रघुवीरपुरा, भी स्थाई समिति के लिए निर्विरोध चुने गई हैं। स्थाई समिति में छह सदस्य होते हैं। निकाय के सभी 64 पार्षदों ने महापौर के चुनाव से पहले पद का शपथ ग्रहण किया। भाजपा ने महक सिंह को स्थाई समिति का अध्यक्ष और लता गुप्ता को उपाध्यक्ष चुना है। ■

भाजपा महापौर, नगर पालिका अफ्रयक्ष, नगर पंचायत अफ्रयक्षों की बैठक संपन्न

सुनियोजित विकास आवश्यक : नितिन गडकरी

हमारा देश सुखी, समृद्ध और शक्तिशाली हो इस लक्ष्य को लेकर हम राजनैतिक क्षेत्र में कार्य कर रहे है। कहा जाता है, कि भारत गांव में बसता है, यदि हम अपना गांव को सुन्दर व विकसित कर ले, तो फिर जिला, प्रदेश और देश भी विकसित व शक्तिशाली बनता है। लेकिन आज देश में गरीबी, भुखमरी और भय का वातावरण है, कांग्रेसनीत केन्द्र सरकार की कथनी और करनी में अंतर है। लेकिन हम राष्ट्रवाद की विचारधारा को लेकर कार्य कर रहे है, तो हमें अपने क्षेत्रों की जनता के प्रति समर्पित भाव से कार्य करना चाहिये। समाज का कल्याण कैसे हो इसके लिये कार्ययोजना तैयार करना व परिश्रम करना होगा। इसके लिये सुशासन और विकास हमारी पार्टी का दूसरा ध्येय वाक्य है। भाजपा शासित प्रदेशों में सुशासन के साथ साथ प्रदेशों का विकास नियोजित तरीके से हो रहा है। हमारी पार्टी का मूलमंत्र पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का सूत्र वाक्य अंत्योदय है, समाज के अंतिम व्यक्ति का चिंतन ही हमारा लक्ष्य है, क्योंकि दरिद्रनारायण को हम भगवान मानकर उसके रहने, खाने, रोजगार की चिंता करेंगे तो हमारा अंत्योदय का लक्ष्य पूरा हो जाएगा। उक्त बात भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गड़करी ने इन्दौर के विजयनगर स्थित होटल मंगलसिटी में 2 मई को आयोजित महापौर, नगर पालिका अध्यक्ष एवं नगर पंचायत अध्यक्षों की बैठक को संबोधित करते हुए कही।

श्री गडकरी ने कहा कि जनप्रतिनिधि पहले आप अच्छा बीज लगायेंगे तो फल भी अच्छा ही मिलेगा। अर्थात् शहर में अच्छे कार्य करेंगे तो प्रतिष्ठा मिलेगी, उस विकास कार्य का श्रेय क्षेत्र की जनता को देंगे तो आपको यश मिलेगा। आपको जब भी अवसर मिले आप कार्य

करें, आम जनता से जुड़े कार्य करें, जनता का भला करें तो जनता आपको फिर से अवसर देगी। जनप्रतिनिधियों को कार्य करते समय कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, लेकिन कठिन से कठिन कार्य को कम से कम समय में अच्छे ढंग से पूरा करना ही प्रभावी जनप्रतिनिधि की निशानी है। जनप्रतिनिधि को जनता से जुड़े कार्यों को प्राथमिकता से हल करना चाहिये, और कार्य कैसा भी हो उसके लिये प्रयास जरूर करना चाहिये, क्षेत्र का विकास करना है, तो क्षेत्र के वरिष्ठ कार्यकर्ताओं और नेताओं के साथ बैठकर कार्य योजना तैयार करना, डेवलपमेंट प्लान तैयार करना चाहिये, जिससे कि क्षेत्र का सुनियोजित विकास हो।

भाजपा राष्ट्रीय महासचिव श्री नरेन्द्र सिंह तोमर ने कहा कि भाजपा के कार्यकर्ताओं के परिश्रम व जनता के समर्थन से जनप्रतिनिधि के रूप में पंचायत, नगर पालिका और महापौर के रूप में कार्य करने का अवसर आप को मिला है। मैंने भी पार्षद के रूप में जनप्रतिनिधि के रूप में कार्य किया और जनता ने विधायक और सासंद के रूप में कार्य करने का मौका भी दिया। संगठन के काम के विस्तार के साथ साथ सत्ता के माध्यम से जनता को सर्वाधिक लाभ मिले, यह हमारा लक्ष्य होना चाहिये। शिवराज जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार की उपलब्धियां आप के माध्यम से ही जनता तक पहुंचे यह महत्वपूर्ण कार्य है।

मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने कहा कि भाजपा सरकार ने पंचायतों को स्वाबलंबी बनाने का कार्य किया है, गांव व शहर के विकास के लिये पैसे की कमी नहीं आने दी जाएगी। अधिक से अधिक जनहितैषी योजनाओं को लागू करने का प्रयास भाजपा सरकार

ने किया है। शहर वास्तव में प्रदेश का आईना होता है, कोई प्रदेश कैसा है, उसका अनुमान शहरों व गांवों से होता है। हमारी सरकार ने तय किया है, कि प्रत्येक शहर का डेवलपमेंट प्लान तैयार किया जाएगा। पार्क, सड़कें, पीने का पानी, सफाई, स्टेडियम और कम से कम एक ऐसी सड़क हो जो पूरे शहर को जोड़ती हो, पहले शहर का नियोजित विकास नहीं होता था। भाजपा सरकार ने नियोजित विकास के साथ–साथ पंचायतों को भी स्वाबलंबी बनाया है।

प्रदेश अध्यक्ष श्री प्रभात झा ने कहा कि यहां सभी अपने क्षेत्र के विकास से जुड़े प्रतिनिधि एकत्रित है। मध्यप्रदेश के विकास में आप सब की महत्वपूर्ण भूमिका है। इंदौर भारत का सर्वश्रेष्ठ शहरों में से एक हो इस संकल्प हो हम पूरा कर रहे है। इसी प्रकार पंचायत नगर पालिका और प्रदेश के अन्य नगरों का विकास तेजी से हो रहा है। भाजपा का कार्यकर्ता जनप्रतिनिधि के रूप में विकास को मुख्य आधार मानता है तभी जनता हमें बार–बार पंचायतों पालिका निगम व महापौर के रूप में चुनती है। जनप्रतिधि का व्यवहार और सरकार की उपलब्धियां जन–जन तक पहुंचाना आवश्यक है। हमें कचरे से बिजली, अस्वच्छ जल से ईंधन बनाने जैसे प्रकल्पों पर काम करने की आवश्यकता है। पार्टी संगठन शीघ्र ही कार्यशाला के माध्यम से विभिन्न विषयों के विशेषज्ञों की कार्यशाला के माध्यम से विकास के नये प्रकल्पों को आपके सामने रखे जाएंगे।

प्रारंभ में श्री नितिन गड़करी का स्वागत भाजपा प्रदेश अध्यक्ष सर्वश्री प्रभात झा, मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान, राष्ट्रीय महासचिव नरेन्द्रसिंह तोमर, भाजपा नगर अध्यक्ष श्री शंकर लालवानी ने किया । भाजपा नगर अध्यक्ष ने सभी मंचासीन अतिथियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम में विशेष रूप से प्रदेश संगठन महामंत्री सर्वश्री अरविन्द मेनन, मंत्री बाबूलाल गौर, जयंत मलैया, इन्दौर के महापौर कृष्णमुरारी मोघे, प्रदेश प्रवक्ता विजेश लूनावत, प्रदेश कार्यालय मंत्री आलोक संजर, राजेन्द्रसिंह, प्रदेश मीडिया प्रभारी डॉ. हितेश वाजपेयी, संभागीय संगठन मंत्री शैलेन्द्र बरूआ उपस्थित थे।

इन्दौर महापौर श्री कृष्णमुरारी मोघे ने मंचासीन अतिथियों को प्रतीक चिह्न भेंट किये। ■

मुख्यमंत्री ने वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से किसानों से की बातचीत

दस वर्षों में 25000 पशु स्वास्थ्य शिविर लगे, राज्यभर में पशुओं की 112 बीमारियों का हुआ खात्मा : नरेन्द्र मोदी

गुजरात के मुख्यमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 8 मई को कहा कि राज्य सरकार ने ग्रामीण व्यवस्था को सुदृढ बनाने के लिए कृषि तथा पशुपालन के वैज्ञानिक विकास को उच्च प्राथमिकता प्रदान की है।

उन्होंने कृषि महोत्सव–2012 के तीसरे दिन वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से राज्यभर के किसानों से बात करते हुए कहा कि सरकार ने वर्तमान वित्तीय वर्ष के लिए पशु चिकित्सा और पालन के 350 करोड़ रुपए का आवंटन किया है।

उन्होंने कहा कि एक समय था जब कृषि को सर्वोत्तम कार्य समझा जाता था और फिर इसकी 50 वर्षों तक उपेक्षा होती रही, परन्तु पिछले दस वर्षों में इसे पुनर्जीवित किया गया है। सरकार शिक्षित युवाओं और तरक्कीपसंद किसानों को खेती और पशुपालन की उच्च विधियों में अनुसंधान और विकास में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित कर रही है। इन प्रयासों से राज्य का दुग्ध उद्योग 68 प्रतिशत बढ़ गया है। ऐसा इसलिए हो पाया क्योंकि पशु स्वामियों की सफल गाथाओं का प्रचार–प्रसार किया गया।

उन्होंने कहा– क्योंकि डेयरी उद्योग में महिलाओं का बहुत बड़ा योगदान है, इसलिए आधुनिक डेयरी कार्यों में उन्हें प्रशिक्षण देने से दूध उत्पादन एवं इसकी अन्य चीजों की उपज बढ़ सकती है। कच्छ और काठीवाड़ी डेयरिया कभी बंद हो चुकी थी, परन्तु अब वे फिर से चालू हो गई हैं। नव–संस्थापित कामधेनु विश्वविद्यालय में कई अनेक तत्संबंधी पाठ्यक्रम शुरू करने पर विचार हो रहा है।

श्री मोदी ने आगे कह कि गुजरात में कोई भी नदी बारह मासी नहीं बहती है, अतः सरकार ने पशुपालन और बागबानी पर विशेष ध्यान दिया। सरकार अपने 2.50 करोड़ पशु–धन को भी उतना ही महत्व देती है। सरकार ने 2700 पशु–स्वास्थ्य शिविर लगाए और इस प्रकार पिछले दस वर्षों में ऐसे 25000 शिविर लगा चुके हैं। अब तक लगभग पशुओं की 112 बीमारियां समाप्त हो चुकी हैं।

नई परियोजनाओं में 57 पशु मोबाइल मेडिकल वैन, 3680 करोड़ रुपए से अच्छी प्रजाति के कृत्रिम शुक्राणु केन्द्र, 30 करोड़ रुपए से चारा बीज वितरण किट, 30 करोड़ रुपए से पशु–तालाब शामिल हैं और साथ ही 1200 एकड़ भूमि में एक आधुनिक चारा फार्म बनाया जाना है, जिससे 6 लाख बीपीएल किसानों को अपनी दुगुनी फसल का लाभ पहुंचेगा। कुछ अन्य नई परियोजनाओं में गोबर गैस और बायो–गैस, नए पशु होस्टल के नए प्रयोग शामिल हैं। ■

पूर्वोत्तर का चौतरफा विकास जरूरी : अरुण जेटली

पिछले दिनों देश के कुछ राज्यों में पूर्वोद्वार छात्रों के साथ दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं घटीं। विदित हो कि असम एवं मणिपुर के एक–एक छात्र ने दिल्ली में आत्महत्या कर ली, जबकि मणिपुर का एक छात्र बेंगलुरु में मृत पाया गया। गत 4 मई 2012 को राज्यसभा में 'देश के कुछ भागों में पूर्वोद्वार राज्यों के साथ विद्यार्थियों के प्रति भेदभाव और नस्लीय दुर्भावना' विषय पर राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली द्वारा दिए गए भाषण का हिन्दी भावांतरण :

माननीय सभापति महोदय, गृहमंत्री ने हाल ही में घटी दो घटनाओं का जिक्र किया जिसके कारण पूरे देश में बेचैनी बढ़ गई है और पर्याप्त अशांति का वातावरण बन गया है। पूर्वोत्तर के दो युवा विद्यार्थी– गुडगांव के पास मानेसर, और बंगलुरू में, अपने प्राणों से हाथ धो बैठे हैं, और ब्रिक्स सम्मिट के अवसर पर दिल्ली में पढ़ने वाले अनेकों विद्यार्थियों और दिल्ली में कार्य कर रहे लोगों को यह गम्भीर शिकायत है कि पुलिस उनके साथ भेदभाव कर रही है और चुन–चुनकर अस्थायी तौर पर पकड़ रही है।

महोदय, 1947 में इस देश के विभाजन के कारण निश्चित ही पश्चिमी क्षेत्रों पर भारी रक्तपात हुआ है। पंजाब ने दुख उठाया, अन्य क्षेत्रों में ऐसा ही हुआ। परन्तु पूर्वोत्तर तो शाश्वत रूप से कष्ट भोगता चला आ रहा है। पूर्वी पाकिस्तान के निर्माण के कारण जो बाद में बांग्लादेश बन गया, यहां से दूरी के लिहाज से हजारों किलोमीटर दूर जाना पड़ा। अब इसका प्रभाव यह हुआ कि इससे पूर्वोत्तर राज्यों की विकासात्मक गतिविधियां बुरी तरह प्रभावित हुईं। विभिन्न सरकारों के प्रयासों के बावजूद भी पूर्वोत्तर राज्य उस ढंग से विकास नहीं कर पाए जितना कि देश के अन्य राज्यों ने किया। पूर्वोत्तर की यह वास्तविक मांग है कि कई केन्द्रीय योजनाओं और परियोजनाओं का प्रयास उनकी मदद के लिए किया जाता है और अन्य बहुत सी बातें रहती हैं जो वास्तव में पूरे स्तर पर खरी नहीं उतर पाती हैं।

मेरी हाल की पूर्वोत्तर राज्य के क्षेत्रों की यात्रा में मैंने पाया है कि अधिकांश राज्यों में अभी तक रेल सेवा भी उपलब्ध नहीं है। असम में भी, जहां यह सेवा उपलब्ध है वहां भी हम देखते हैं कि जिस बात को हम पचासवें और साठवें दशक में देश के अन्य भागों के बारे सुना करते थे कि यहां वह मीटर गेज को ब्रॉडगेज (बड़ी लाइन) में बदलने का एक बड़ा मुद्दा आज भी दूर है, और यह बात विशेष तौर पर बराक घाटी पर लागू होती है। आज देश के बाकी हिस्सों में हाईवे प्रोजेक्ट सफलतापूर्वक चला रहा है। महासड़क योजना को, जिसे पश्चिम बंगाल के पार पूर्वोत्तर क्षेत्रों तक विस्तार करना था, वह भी हम देखते हैं कि कुछ खंडों में ही निर्मित हो पाई है और उपयोग लायक भी नहीं है। इस सबसे भारी कष्ट पहुंचा है। पूर्वोत्तर में शैक्षिक ढांचा भी लड़खड़ाया हुआ है। मैंने कुछ अध्ययनों की रिपोर्टें देखी है, जिसे शैक्षिक संस्थाओं के बारे में कराया गया था, और जिसे हमने पूर्वोत्तर में स्थापित किया था। यदि मैं कुछ मोटे बिन्दुओं पर एक टिप्पणी पढ़ूं तो वह इस प्रकार है। इसमें कहा गया है कि दस साल से अधिक समय से उक्त पाठ्यक्रम को अद्यतन नहीं किया गया, नए पाठ्यक्रमों को जोड़ा नहीं गया, इंस्टीट्यूट–इंडस्ट्री से बातचीत नहीं होती, संकाय (फैक्ल्टी) समाप्त हो जाती है और पर्याप्त संकाय की सुविधा उपलब्ध नहीं रहती है, अर्हक संकायों की किस्म और परिमाण बुरी तरह से गिरती जा रही है, बहुत से मामलों में पीएचडी प्राप्तकर्ता बेहद कम हैं, इंडस्ट्री के साथ विद्यार्थियों का प्लेस्मेंट भी एक दम कमजोर है। अतः, अब इन्हीं सभी कारणों से पूर्वोत्तर क्षेत्र की विद्यार्थियों को बड़ी संख्या में शिक्षा के लिए देश के अन्य भागों में जाना पड़ता है। अब यह कारण अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण है, परन्तु इससे एक आशा की किरण भी दिखाई पड़ती है। देश

के साथ इन लोगों का जुड़ना राष्ट्रीय एकता को मजबूत करता है और इससे हम वास्तव में उनकी समस्याओं को समझने मे मदद मिलती है। महोदय, मुझे याद है, जब मैं विद्यार्थी था, तो जिस संगठन से मैं जुड़ा था वह अन्तर–राज्यीय स्तर पर पूर्वोत्तर राज्यों के अनुभवों के सम्बन्ध में कार्यक्रम चलाती थी। छात्रों में प्रवास आयोजित होते थे, उस समय अध्ययन के लिए बहुत लोग नहीं होते थे, वे यहां आकर कुछ दिनों के लिए परिवारों के साथ रहते थे और हम उनकी बात समझ सकते थे। अब ऐसी स्थिति है जिसे हम वृहद प्रसंग में देखते हैं अब हम सैंकड़ों–हजारों लोगों से मिलते हैं। वास्तव में, एक हाल के अध्ययन में 2005 और 2010 के बीच की तुलना की गई है जिससे पता चलता है कि पूर्वोत्तर से नौकरी के लिए आने वाले लोगों की संख्या 12 गुणा बढ़ गई है। यह है वह आंकड़ा। यह 2005 में 34,000 था और 2010 में यह 4,14,850 हो गया है। इतनी तेजी से यह फैला है। इसमें आशा की किरण यह है कि हम देखते हैं कि यह विद्यार्थी अत्यंत आकर्षक व्यक्तित्व, विनम्र, देश के अन्य लोगों के साथ विचार विमर्श करने इच्छुक होते हैं, हमें उन्हें ऐसा महसूस कराना चाहिए कि वे समाज के अन्य लोगों के साथ मिल सकें। परन्तु, साथ ही अधिकांशतः ये विद्यार्थी देश के अन्य भागों में बेहतर किस्म की उच्च शिक्षा के इंस्टीट्यूटों का लाभ उठाना चाहते हैं।

वे अपनी शैक्षिक रूपरेखा और व्यक्तित्व बनाना चाहते हैं और चाहते हैं कि वे इस विकास गाथा का अंग बन सके, जिसकी बात हम देश के बाकी हिस्सों में करना चाहते हैं। हमें मानना होगा और यह सचमुच की स्वीकारोक्ति होगी जिसे हर व्यक्ति को करना भी चाहिए कि उन क्षेत्रों का विकास उस गति से नहीं हो पाया है, जिसकी हम उम्मीद करते थे। अतः, शिक्षा की तलाश में, बेहतर रोजगार की तलाश में, उन्हें देश के विभिन्न भागों में जाना पड़ता है। अतः, मैं देखता हूं कि जब गृहमंत्री के बयान में कहा जाता है कि ''मैं यह बात बहुत साफ–साफ कहना चाहता हूं कि पूर्वोत्तर राज्यों का कोई भी नागरिक देश के किसी भाग में यात्रा कर सकता है और रह सकता है। उन्हें सुरक्षा और शांति का पूर्ण अधिकार है।''

गृहमंत्री के बयान में कहा जाता है कि ''मैं यह बात बहुत साफ–साफ कहना चाहता हूं कि पूर्वोद्वार राज्यों का कोई भी नागरिक देश के किसी भाग में यात्रा कर सकता है और रह सकता है। उन्हें सुरक्षा और शांति का पूर्ण अफ्रिकार है।'' उन्हें किसी भी प्रकार के नस्लीय भेदभाव से मुक्त होकर रहने का अफ्रिकार भी है। उन्हें विकास के लाभ उठाने अफ्रिकार है जिसे देश के अन्य भागों के लोग भी सीमित स्तर तक उठा रहे हैं। इन परिस्थितियों में, महोदय, हमारे लिए आवश्यक है कि सभी विद्यार्थियों और अन्य नागरिकों को, जो पूर्वोद्वार राज्यों से, चाहे वे देश के किसी भी भाग में नौकरी की तलाश में आते हों, हम उन्हें न केवल सुरक्षा प्रदान करें बल्कि हमें उनसे बहुत कुछ सीखना भी चाहिए।

उन्हें किसी भी प्रकार के नस्लीय भेदभाव से मुक्त होकर रहने का अधिकार भी है। उन्हें विकास के लाभ उठाने अधिकार है जिसे देश के अन्य भागों के लोग भी सीमित स्तर तक उठा रहे हैं। इन परिस्थितियों में, महोदय, हमारे लिए आवश्यक है कि सभी विद्यार्थियों और अन्य नागरिकों को, जो पूर्वोत्तर राज्यों से, चाहे वे देश के किसी भी भाग में नौकरी की तलाश में आते हों, हम उन्हें न केवल सुरक्षा प्रदान करें बल्कि हमें उनसे बहुत कुछ सीखना भी चाहिए।

अधिकांशतः ये लोग बहु–भाषी हैं, बहुधर्मी हैं, अलग–अलग मजहबों के हैं। अतः हमें बहुत कुछ उनसे सीखना होगा। इस प्रसंग में, मैं चाहूंगा कि माननीय गृहमंत्री से विचार करें कि जो भी कदम हम पहले उठा चुके हैं, उनके अलावा, चाहे इन क्षेत्रों में, जहां बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपलब्ध रहते हैं, वह संघ–शासित क्षेत्रों में हो या राज्यों में हो, वहां एक विशेष हैल्पलाइन बनाई जाए। हमारे पास पूर्वोत्तर के विद्यार्थियों क सर्वेक्षणों और अध्ययनों के आकड़े हैं। हाल के एक अध्ययन में कहा है कि उनमें से लगभग 86 प्रतिशत विद्यार्थियों को किस न किसी प्रकार से तंग किए जाने की शिकायत रहती है। यदि यह आंकड़ा इतना बड़ा है तो निश्चित ही चौंकाने वाला है। यह हमारे लिए आंख खोलने वाला है। अतः तो क्या हमें उन क्षेत्रों में, जहां ये विद्यार्थी पढ़ते हैं या काम करने वाले लोग हैं, वहां एक विशेष हैल्पलाइन की आवश्यकता नहीं है? यह कोई महंगी बात भी नहीं है। मेरे विचार में, यदि किसी भी राज्य को समुचित परामर्श दिया जाए तो वह इसे मानने को तैयार हो जाएगी। जब जम्म और कश्मीर, पूर्वोत्तर राज्यों के विद्यार्थी यहां आते हैं और पढ़ते हैं या लोग आते हैं और काम करते हैं तो मेरे विचार में यह हमारे वृहद राष्ट्रीय लक्ष्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम भारतीय समाज की एकता को लिए मजबूत करने के लिए उनके प्रति समाज के रूख को बदलें। अतः, मेरे विचार में, विश्वविद्यालयों में, रोजगार स्थलों में और समाज में मीडिया को, विशेष रूप से इलेक्ट्रानिक मीडिया को बहुत बड़ी भूमिका निभानी होगी। हमने ऐसे अभियान चलाए है कि

हम पर्यटकों से व्यवहार करें। हमने ऐसे अभियान चलाए है कि कैसे कमजोर वर्गों के लोगों के साथ व्यवहार किया जाए। हमने ऐस अभियान चलाएं हैं कि कैसे समाज में महिलाओं के साथ व्यवहार हो। अतः, इस सम्बन्ध में, हमें भारत में ऐसा अभियान चलाने की आवश्यकता है जिससे हम अपने ही लोगों के संवेदनशील बना सकें जो विद्यार्थी या लोग यहां पढ़ने या काम करने आते हैं हम उनके साथ कैसा व्यवहार करें। अन्त में, मैं सरकार से माननीय गृहमंत्री के माध्यम से आग्रह करना चाहूंगा कि ऐसे क्षेत्रों में, जहां पूर्वोत्तर में स्पष्ट ही विकासात्मक गतिविधियां लटकी पड़ी हैं, चाहे वह सड़कों, रेलवे, उनकी कनेक्टिविटी, शैक्षिक संस्थाओं की उपेक्षा से जुड़ी हो, उन्हें सरकार को 'डोनर' के माध्यम से अत्यंत गम्भीरता से लेना चाहिए। ऐसे क्षेत्र हो सकते हैं, जिनमें समय लगता हो, परन्तु ऐसे अन्य कुछ क्षेत्र हैं जिन्हें बहुत आसानी से किया जा सकता है, मेरे विचार में, उन सभी क्षेत्रों को उच्च प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए। ■

संप्रग की किसान विरोधी नीति दुर्भाग्यपूर्ण : जावडेकर

गत 2 मई, 2012 को राज्यसभा में 'महाराष्टौ के विदर्भ क्षेत्र में किसानों द्वारा आत्महत्या' का मामला भाजपा के राष्टौीय प्रवत्त श्री श्काश जावडेकर ने उठाया :

मैं सरकार का ध्यान हाल ही की एक घटना की ओर दिलाना चाहता हूं जो कल महाराष्ट्र में घटित हुई। विदर्भ में एक ही दिन में 5 किसानों ने आत्महत्या की है। इसे आत्महत्या नहीं कहा जाना चाहिए बल्कि यह एक प्रकार की हत्या है क्योंकि इसके लिए सरकार जिम्मेदार है। 'संप्रग' शासन काल के 8 वर्षों में राज्य के 6 जिलों में लगभग 9 हजार किसानों ने आत्महत्या की है। किसान विरोधी नीति के कारण वे अभी भी आत्महत्या कर रहे हैं। बाबुओं ने सरकार द्वारा दिए गए पैकेज का दुर्विनियोजन किया है। किसान ऋण के बोझ से दबे हुए हैं। पास ही के राज्य गुजरात में स्थिति कहीं अधिक बेहतर है क्योंकि वहां माइक्रो–सिंचाई, चेक डैम, खेती–तालाब और अन्य सुविधाएं कपास के किसानों को उपलब्ध हैं। मेरा सरकार से अनुरोध है कि वह एक नई कार्यनीति घोषित करे और महाराष्ट्र के किसानों को तत्काल एक व्यापक पैकेज प्रदान करे।■

कपास किसानों के प्रति सरकार की गहरी उपेक्षा : वेंकैया नायडू

गत 27 अश्ैल 2012 को राज्यसभा में देश में कपास किसानों से सम्बन्फ्रित समस्याओं पर उठाए गए मुघों पर श्री एम. वेंकैया नायडू द्वारा जारी श्ैस विज्ञप्ति

भारतीय जनता पार्टी के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सांसद द्वारा प्रश्नोत्तर काल के बाद राज्यसभा में कपास बाजार में प्रचुरता, कीमतों में गिरावट और किसानों के आंदोलनों का मुद्दा उठाया। उन्होंने मांग की कि सरकार इस बारे में बयान दे कि आखिर पहले तो क्यों और किसकी शह पर 5 मार्च को कपास का निर्यात रोका गया और फिर क्यों निर्यात पर ऐसी कुछ शर्तें थोपी गई जिससे और आगे निर्यात करना संभव ही नहीं रहा।

श्री नायडू ने कहा कि कपास की कीमतें देशभर में बुरी तरह से गिर गई हैं और किसानों को लाभप्रद कीमत नहीं मिल पा रही है। श्री नायडू ने कहा कि पिछले वर्ष की 6000 रुपए की तुलना में कपास की कीमतें 3500 रूपए के निम्नतम स्तर पर पहुंच गई हैं। उनका यह भी कहना था कि कॉटन कार्पोरेशन ऑफ इण्डिया न्यूनतम समर्थन मूल्य पर कपास की खरीदारी नहीं कर रही है। श्री नायडू ने इस बात पर अफसोस जाहिर किया कि कपास निर्यात पर प्रतिबंध हटाने की संदिग्धता के कारण बाजार पर दुष्प्रभाव पड़ रहा है और कीमतें लगातार गिरती जा रही हैं। उन्होंने कहा कि आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र और गुजरात में कपास की गांठें इकट्ठी होती चली जा रही हैं। श्री नायडू का यह भी कहना था कि हाल ही में महाराष्ट्र में एक किसान ने आत्महत्या कर ली।

श्री नायडू ने कहा कि किसान आगामी बरसात के कारण चिंतित है और लाखों की संख्या में कपास की गांठें इकट्ठी हो रही हैं। अतः सरकार को तुरन्त हस्तक्षेप बहुत आवश्यक है। श्री नायडू ने कपास के निर्यात पर लगी शर्तों को तुरंत हटाने की मांग की। श्री नायडू ने कपास किसानों के कष्टों पर सरकार की उपेक्षा भाव का विरोध किया। क्योंकि किस सरकार कोई ठोस आश्वासन नहीं दे रही है, इसलिए श्री नायडू ने सदन से वाक–आऊट किया। भाजपा के सभी सदस्यों ने भी सदन से वाक–आउट किया। ■

पाकिस्तान में हिंदुओं की दुर्दशा पर चुप्पी तोड़े संप्रग सरकार : डॉ. जोशी

गत 2 मई 2012 को लोकसभा में शून्यकाल के दौरान भाजपा के पूर्व राष्टीय अफ्रयक्ष डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने 'पाकिस्तान के सिंफ्रा प्रांत में हिंदुओं के मानवाफ्रिाकार उल्लंघन' का मामला उठाया। उन्होंने इस मसले पर गहरी चिंता जताते हुए संप्रग सरकार पर आरोप लगाया कि इस मुद्दे को वह पड़ोसी देश पाकिस्तान के साथ मजबूती से नहीं उठा रही है। हम यहां डॉ. जोशी द्वारा दिए गए भाषण का संपादित पाठ श्काशित कर रहे हैं:

I भापति जी, यह विषय बहुत गंभीर है और इस पर मैं सारे सदन और सरकार का ध्यान अकर्षित करना बहुत आवश्यक समझता हूं। हमारे पड़ोस पाकिस्तान में जिस प्रकार की घटनाएं हो रही हैं, वे सम्पूर्ण मानवीय अधिकारों और सांस्कृतिक अधिकारों का घोर उल्लंघन हैं। It is complete violation of human rights and cultural rights in Pakistan. मुझे अफसोस है कि प्रधानमंत्री जी ने इन मामलों को, जब उनकी बात वहां के प्रधानमंत्री जी से हुई थी, तब नहीं उठाया। हमारे विदेश मंत्री ने भी इन मामलों को नहीं उठाया। आज स्थिति यह है कि पाकिस्तान के सिंध प्रदेश में बलपूर्वक हिन्दू लड़कियों का अपहरण किया जा रहा है, उनका बलात् धर्मांतरण किया जा रहा है। कोर्ट के आदेश के बावजूद भी उनको संरक्षण नहीं दिया जा रहा है। अगर आप देखें, स्थिति ऐसी है, पुलिस रिकार्ड के मुताबिक हर महीने औसतन 25 लड़कियां इस प्रकार के दुर्भाग्य का शिकार हो रही हैं। आज सिंध में 90 प्रतिशत हिन्दुओं की संख्या रहती है। वहां नौजवान हिन्दू लड़कियों को चिन्हित करके उनका अपहरण किया जा रहा है। उनके साथ बलात्कार किया जा रहा है और उनका बलात् धर्मांतरण किया जा रहा है। उसके बाद जब कोर्ट उनको कोई राहत देती है, तब उनको धमकियां दी जाती हैं। उनके परिवारों को हर तरह से सताया जाता है। उनको हर तरह से धमकियों के आधार पर रोका जाता है। नतीजा यह हुआ कि हर महीने वहां से दस–बीस की संख्या में हिन्दुओं का पलायन हो रहा है। 400 से अधिक हिन्दू परिवार पिछले दस महीने में यहां आये हैं। दुर्भाग्य की बात है कि गृह मंत्रालय और विदेश मंत्रालय इस मामले में बिल्कुल चुप हैं और इस मामले को गंभीरता से नहीं ले रहे। जब मिनिस्ट्री ऑफ एक्सटर्नल अफयेर्स से सवाल किया गया, तो उन्होंने जवाब दिया कि यह पाकिस्तान का आंतरिक मामला है। यह आंतरिक मामला नहीं है। यह मामला मानवीय अधिकारों का है। यह मामला सांस्कृतिक अधिकारों का है। अगर मानवीय अधिकारों का उल्लंघन है, धर्मांतरण की बलात् प्रक्रिया है और लोगों को अपने धर्म पालन की स्वतंत्रता नहीं है, तो यह सांस्कृतिक अधिकारों का भी उल्लंघन है। हम हर बार कहते हैं कि पाकिस्तान के साथ हमारी वार्ता हो रही है, होनी चाहिए, हम अच्छे संबंध चाहते हैं। लेकिन इस कीमत पर कि अपने देश के पड़ोस में मानव अधिकारों का उल्लंघन होता रहे, और आप उन मामलों को अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर नहीं उठाते।

आज सिंफ्रा में 90 प्रतिशत हिन्दुओं की संख्या रहती है। वहां नौजवान हिन्दू लड़कियों को चिन्हित करके उनका अपहरण किया जा रहा है। उनके साथ बलात्कार किया जा रहा है और उनका बलात् फ्रार्मांतरण किया जा रहा है। उसके बाद जब कोर्ट उनको कोई राहत देती है, तब उनको फ्रामकियां दी जाती हैं।

आपने इन मामलों को अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोगों के सामने नहीं उठाया, आपने कभी इन मामलों को पाकिस्तान की सरकार से नहीं उठाया और तारीफ यह है कि दिल्ली में लोगों को यह पता नहीं है, गृहमंत्री जी यहां सामने बैठे हैं, कि कितने परिवार यहां पाकिस्तान से शरणार्थी बनकर

आए हैं। वे रिलीजियस परसिक्यूशन के आधार पर शरणार्थी बनकर आए हैं, इसलिए यह अंतर्राष्ट्रीय मामला भी बनता है। ये वहां से केवल किसी तस्करी में भागकर नहीं आए हैं, ये अपने अधिकारों के संरक्षण के लिए, अपने धर्म को बचाने के लिए अपनी संस्कृति को बचाने के लिए, वहां की सरकार के उत्पीड़न और अत्याचार के कारण आए हैं। यह याद रखना चाहिए कि पाकिस्तान में थियोक्रेटिक स्टेट है, वह एक धार्मिक राज्य है, पांथिक राज्य है, इसलिए वहां माइनॉरिटीज के साथ इस प्रकार का अत्याचार हो रहा है, इसे हमें सहन नहीं करना चाहिए। हमारे देश में कितना प्रबल मानवाधिकार आयोग है, हम इन मामलों को यहां बर्दाश्त नहीं करते, लेकिन हमारे पड़ोस में यह हो रहा है और इस पर सरकार चुप है। वे लोग यहां आते हैं, तो कहते हैं कि हमें इस सरकार पर भरोसा था कि यह सरकार मानवाधिकारों की रक्षा करेगी, हमारे सांस्कृतिक अधिकारों की रक्षा करेगी, लेकिन यह सरकार हमको धोखा दे रही है। वे कहते हैं कि this Government has betrayed us. यह सरकार हमें धोखा दे चुकी है, हमारा संरक्षण नहीं करती। मैं जानना चाहता हूं ये घटनाएं कितने दिनों से अखबारों में आ रही हैं, क्या एक्शन लिया गया? गृहमंत्री जी ने क्या किया, विदेश मंत्री ने क्या किया, प्रधानमंत्री जी ने क्या किया? जब पाकिस्तान के प्रधानमंत्री यहां आए थे, तो क्या उनके साथ इस मसले को उठाया गया? ये गंभीर प्रश्न हैं। हम अपने देश के लोगों को किस प्रकार का संदेश दे रहे हैं? हम दुनिया को क्या संदेश दे रहे हैं कि भारत दुनिया के अंदर सांस्कृतिक अधिकारों और मानवाधिकारों के लिए लड़ना नहीं चाहता है। हम हमेशा बोलते रहे हैं कि मानव अधिकारों का संरक्षण होना चाहिए, Cultural rights should be preserved and protected. लेकिन यह तो जबर्दस्त जेनोसाइड हो रहा है कल्चरल राइट्स का। लोगों को भगाया जा रहा है, क्योंकि उनका धर्म अलग है, क्योंकि उनकी संस्कृति अलग है और क्योंकि वे हिन्दू हैं। वे लोग आएंगे यहीं, कहीं और तो जा नहीं सकते। अरब सागर में जाएंगे नहीं, वहां से अफगानिस्तान में भी नहीं जाएंगे। भारत की सरकार का, भारत के विदेशमंत्री का, गृहमंत्री का, प्रधानमंत्री का क्या फर्ज है, इसका उत्तर आज देश जानना चाहता है। आप इन्हें क्या संरक्षण देंगे? क्या आप पाकिस्तान की सरकार से बात करेंगे कि वह इस प्रकार की घटनाओं को बंद करे? क्या आप इन मामलों को अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में उठाएंगे और क्या आप इस देश की जनता को आश्वासन दे सकेंगे कि भारत में उत्पन्न हुए किसी धर्म के प्रति यदि इस प्रकार का अत्याचार होगा, तो सरकार उसका निषेध करेगी।

यह याद रखना चाहिए कि पाकिस्तान में थियोट्टेटिक स्टेट है, वह एक फ्रार्मिक राज्य है, पांथिक राज्य है, इसलिए वहां माइनॉरिटीज के साथ इस प्रकार का अत्याचार हो रहा है, इसे हमें सहन नहीं करना चाहिए। हमारे देश में कितना प्रबल मानवाफ्रिकार आयोग है, हम इन मामलों को यहां बर्दाश्त नहीं करते, लेकिन हमारे पड़ोस में यह हो रहा है और इस पर सरकार चुप है।

मैं आपको ध्यान दिलाना चाहता हूं कि जिस समय देश का विभाजन हुआ था, हमने ही कहा था कि हिन्दुओं को वहां रहना चाहिए, भारत की सरकार यहां मौजूद हैं। उस समय वहां 15 प्रतिशत हिन्दू थे, जिनकी संख्या आज घटकर दो प्रतिशत रह गयी है। यह क्या हो रहा है? इस प्रकार का जेनोसाइड, कल्चरल जेनोसाइड हम कब तक सहन करेंगे? हम जानना चाहते हैं कि केन्द्र सरकार की इस पर क्या नीति है? क्या प्रोटेक्शन वह देना चाहती है इन परिवारों को और किस प्रकार से वह इन सांस्कृतिक अधिकारों के जेनासाइड को रोकेगी। This genocide of cultural rights, an invasion of a particular religion and culture by a Government through a deliberate policy. क्या आप इसे स्वीकार करते हैं? क्या आप इसे मानेंगे, हम नहीं मानते हैं। इसलिए मैं मांग करता हूं प्रधानमंत्री जी से, विदेशमंत्री से और गृहमंत्री से कि इस समस्या के बारे में देश को आश्वस्त करें कि वे क्या कदम लेंगे और कब तक इन घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोक देंगे? इस पर हम आपका बयान चाहेंगे और यह चाहेंगे कि इस देश को और दुनिया भर के हिन्दुओं को आप इस बात का आश्वासन दें कि धार्मिक और सांस्कृतिक आधार पर अगर उनके साथ उत्पीड़न होगा, तो भारत की यह सरकार, भारत की जनता उनके साथ खड़ी होगी। यह कोई साम्प्रदायिक मामला नहीं है, लेकिन यह सांस्कृतिक और मानवाधिकारों का मामला है और इसको बचाने का कर्त्तव्य भारत जैसे देश का सबसे अधिक बनता है।

मुझे अफसोस है कि सरकार इस मामले में चुप रही है, बैठी रही है, सोती रही है, शायद इसलिए कि ये अभागे हिन्दू हैं। क्या उनका यही अपराध है कि वे हिन्दू हैं? अगर ऐसा नहीं है, तो अभी तक आपने क्या किया और आगे आप क्या करना चाहते हैं, इसका बयान आप इस सदन में दें।■

सिर्फ शब्दों की पुष्पांजलि नहीं विशेष प्रावधान हो महिला हित में : स्मृति ईरानी

गत 27 मार्च 2012 को राज्यसभा में बजट 2012–13 पर हुई चर्चा के दौरान भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती स्मृति ईरानी ने बजट में महिलाओं की अनदेखी किए जाने का आरोप लगाया और तथ्यों एवं तर्कों के साथ संप्रग सरकार की महिला विरोफ्री नीतियों पर जमकर प्रहार किया। हम यहां उनके भाषण का संपादित पाठ प्रकाशित कर रहे हैं:–

यत्र नार्यस्तु पूज्यते रमन्ते तत्र देवता। मुझे इस बात का यकीन है कि आज इस सदन में ऐसे कई महानुभाव हैं, जिन्होंने अपने भाषण में नारी की स्तुति करते हुए, नारी की वंदना करते हुए उपनिषद् के संदेश का उल्लेख जरूर किया होगा, लेकिन इस देश का दुर्भाग्य यह है कि लोकतंत्र के मंदिर में महिला को शब्दों की पुष्पांजलि तो कई बार चढ़ाई जाती है, लेकिन देश के बजट में महिला के लिए विशेष प्रावधान नहीं किया जाता। प्रभाजी ने विपक्ष पर यह आरोप लगाया कि आप विरोध का चश्मा लगा कर पूरे बजट को देख रहे हैं। प्रभा जी, आज विपक्ष का चश्मा उतारते हुए मैं इंसानियत का चश्मा पहन कर कुछ बातें इस बजट के संदर्भ में आपके सामने रखना चाहूंगी।

महिला का संघर्ष उसके जन्म से ही शुरू हो जाता है। आज हमारे देश में कई परिवार ऐसे हैं, जहां पर अगर इस बात की सूचना पहुंचती है कि गर्भ में बेटी पल रही है, तो उस बेटी की हत्या की तैयारी वे परिवार शुरू कर देते हैं। इस सदन में कई बार महिला सांसदों ने कन्या भ्रूण हत्या की ओर सबका ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया। आदरणीया माया जी जब कन्या भ्रूण हत्या पर बोलीं, तो प्रभा जी ने भी उसका समर्थन किया। आज यह इस देश का दुर्भाग्य है कि हमारे देश में हर साल कन्या भ्रूण हत्या की वजह से एक करोड़ से भी ज्यादा कन्याएं लुप्त होती हैं, लेकिन हमारे देश में वह आंकड़ा मात्र एक स्पेशल मेंशन के माध्यम से हमें भयभीत करता है। मैं आज आपका ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं महाराष्ट्र की उस सोशल एक्टिविस्ट की तरफ, वह वर्षा देशपांडे, जो मराठवाड़ा क्षेत्र में सब सोनोग्राफी क्लिनिक्स में स्टिंग ऑपरेशन करते हुए डॉक्टर से पूछताछ कर रही थी कि आजकल मीडिया के माध्यम से जब खबरें आती हैं कि नाली में या गार्बेज केन में फीटस पाया जाता है, तो पुलिस कार्रवाई करती है, आप ऐसी कार्रवाई से कैसे बचते हैं, तो डॉक्टर ने स्टिंग ऑपरेशन करने वाली उस महिला एक्टिविस्ट से कहा कि मैंने क्लिनिक में छः कुत्ते बांध रखे हैं, जब फीटस निकाला जाता है, तो वह उन कुत्तों को खिलाया जाता है, ताकि पुलिस और मीडिया के लिए कोई भी सुराग न बचे। सर, जब मैंने यह घटना सुनी, तब एक मां होने के नाते मैंने सोचा कि काश, इस सदन में हम स्पेशल मेंशन, जीरो ऑवर से उभर कर एक ऐसी राष्ट्रीय पॉलिसी का निर्माण करें, जो कन्या भ्रूण हत्या के इस कलंक को हमारे देश से मिटाने के लिए एक awareness campaign चला सके और काश, हमारे देश के बजट में उसके लिए कोई न कोई प्रावधान हो, लेकिन तब मैंने सोचा कि जब वित्त मंत्री के पास जीती–जागती महिला के लिए वक्त नहीं है, तो वे उस बच्ची की आवाज कैसे बनेंगे, जिसने अभी तक

एक मां होने के नाते मैंने सोचा कि काश, इस सदन में हम स्पेशल मेंशन, जीरो ऑवर से उभर कर एक ऐसी राष्ट्रीय पॉलिसी का निर्माण करें, जो कन्या भ्रूण हत्या के इस कलंक को हमारे देश से मिटाने के लिए एक awareness campaign चला सके और काश, हमारे देश के बजट में उसके लिए कोई न कोई प्रावफ्रान हो, लेकिन तब मैंने सोचा कि जब विद्वा मंत्री के पास जीती–जागती महिला के लिए वक्त नहीं है, तो वे उस बच्ची की आवाज कैसे बनेंगे, जिसने अभी तक जन्म नहीं लिया है।

जन्म नहीं लिया है। शायद इसीलिए जब यह सरकार बच्चों के पालन–पोषण पर भाषण देती है, तो सरकार के शब्द मुझे खोखले नजर आते हैं। हाल ही में आदरणीय प्रधानमंत्री जी ने कहा कि कुपोषण, malnutrition हमारे लिए एक national shame है, लेकिन यह नहीं बताया कि भारत सरकार ने कुपोषण से लड़ने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया है। प्रभा जी, मैं विपक्ष की एक सदस्या होने के नाते यह आरोप नहीं मढ़ रही हूं। I quote, "The National Nutrition Mission, which was to coordinate..." "...efforts of different Ministries in line with the National Nutrition Policy, identify nutritionally backward regions and groups, monitor and evolve mechanisms for coordination and conduct of evaluation studies..." ? National Nutrition Mission, जिसके लिए महिला और बाल विकास विभाग में पिछले साल एक सौ करोड़ का प्रावधान था, अगर आप उस महिला और बाल विकास विभाग के Chief Controller of Accounts की वेबसाइट पर data पढ़ें, तो जान पाएंगे कि अप्रैल 2011 से 15 मार्च 2012 तक National Nutrition Mission पर सरकार ने कितना खर्च किया– शून्य। शायद इसीलिए आज भारत में किसी को आश्चर्य नहीं होता that 42 per cent of our children below five are malnourished and 59 per cent are stunted. In fact, Sir, when India found itself on the 67th spot in the World Hunger Index, way behind Botsvana, Congo, Nepal and even Pakistan, I wondered why my democracy cannot ensure the safety of its own future generation. महोदय, जहां तक भविष्य का सवाल है, तो इस बजट को पढ़ कर कोई भी महिला अपने भविष्य को भी सुरक्षित नहीं पाएगी। आज सीमा जी ने कई ऐसी महिला नीतियों का उल्लेख किया, जिनके बारे में आंकड़े देख कर उनमें हताशा पैदा हुई।

मैं आज इस सदन से कहना चाहती हूं कि जिस देश में हर पांच मिनट में महिला का बलात्कार होता है, उस देश में महिला बाल विकास मंत्रालय के आंकड़े कहते हैं कि relief and rehabilitation of rape victim के लिए 45 करोड़ रूपये का प्रावधान था, लेकिन 1 मार्च 2012 तक खर्चा हुआ– 'शून्य'। जिस देश में एनजीओज के आंकड़े यह कहते हैं कि 45 प्रतिशत महिलाएं गांवों में और 35 प्रतिशत महिलाएं शहरों में कहीं न कहीं domestic violence का शिकार रही हैं, उस देश की महिलाओं को यह दिलासा दिया जाता है कि यूपीए की सरकार ने Domestic Violence Act के तहत महिलाओं के संरक्षण की योजना की है, लेकिन उस महिला को, जो पीड़ित है, यह नहीं बताया जाता कि Protection of Women from Domestic Violence Act को implement करने के लिए भारत की सरकार ने एक नये पैसे का प्रावधान नहीं किया है।

विद्वा मंत्री जी के इस भाषण को पढ़ते हुए कहीं न कहीं मैं सोचती हूं कि विद्वा मंत्री जी ने शायद यह ऐलोकेशन इसलिए नहीं किया क्योंकि वे जानते हैं कि महिला और बाल कल्याण विभाग एक रूपया खर्च नहीं करने वाला। शायद इसीलिए हमारे देश की महिला आयोग की राष्टौीय अफ्रयक्षा हमारे देश की बेटियों को यह हिदायत देती हैं कि अगर राह चलते कोई बदमाश तुम्हें सैक्सी कहे, तो उससे तुम्हें आपद्वि नहीं होनी चाहिए।

महोदय, आज वित्त मंत्री जी के इस भाषण को पढ़ते हुए कहीं न कहीं मैं सोचती हूं कि वित्त मंत्री जी ने शायद यह ऐलोकेशन इसलिए नहीं किया क्योंकि वे जानते हैं कि महिला और बाल कल्याण विभाग एक रूपया खर्च नहीं करने वाला। शायद इसीलिए हमारे देश की महिला आयोग की राष्ट्रीय अध्यक्षा हमारे देश की बेटियों को यह हिदायत देती हैं कि अगर राह चलते कोई बदमाश तुम्हें सैक्सी कहे, तो उससे तुम्हें आपत्ति नहीं होनी चाहिए। शायद महिला आयोग की अध्यक्षा हमारे देश की बेटियों को यह संकेत देना चाहती हैं कि भारत सरकार महिलाओं और बेटियों की सुरक्षा के लिए बिल्कुल चिंतित नहीं हैं।

महोदय, आज प्रभा जी ने और सीमा जी ने अपने भाषण में Self-Help Group का उल्लेख किया और मैं यह कहना चाहती हूं कि इस सरकार को अगर चिंता है तो मात्र घोषणाओं की चिंता है। 1993 में 31 करोड़ के कॉर्पस से राष्ट्रीय महिला कोष को बनाया गया। Economic Survey यह कहता है कि आज वह कॉर्पस 180 करोड़ तक पहुंच गया है। महिला और बाल कल्याण के अगर आप आंकड़े देखें तो पिछले साल का प्रावधान 100 करोड़ का था और Self-Help Groups को पैसा कितना मिला? 'शून्य'। स्वयंसिद्ध योजना के तहत ऐलोकेशन किया गया, ताकि Self-Help Groups के माध्यम से महिलाओं को सहारा मिल सके और ऐलोकेशन मात्र ये सरकार के कागज हैं विपक्ष के नहीं, ऐलोकेशन मात्र 30 लाख रूपये का हुआ और खर्चा हुआ 'शून्य'।

अगर कांग्रेस के मेरे साथी कहीं न कहीं सहारा लेना

चाहें तो प्रियदर्शनी योजना का सहारा ले सकते हैं, जिसमें Self-Help Groups के लिए पिछले साल ऐलोकेशन हुआ 15 करोड़ का और खर्चा हुआ मात्र 14 लाख।

मैं पूछना चाहूंगी कि जिस देश में पॉलिसी की घोषणा होती है और इम्प्लिमेंटेशन पर ध्यान नहीं दिया जाता, उस देश में वाकई में क्या महिला सशक्त हो पाएगी? आज वह महिला, जो देश की 121 करोड़ की आबादी में 58 करोड़ की सहभागी है, उस महिला के लिए इस बजट में 2 प्रतिशत का भी ऐलोकेशन नहीं है।

महोदय, आज मैं यह कहना चाहती हूं कि हमारी सरकार Provisional Census के डाटा को देखते हुए इस बात का दम भरती है कि भारत की महिला साक्षर हो रही है। आज ग्रेजुएट्स में महिलाओं की संख्या 48 प्रतिशत है, लेकिन working women hostel देशभर में मात्र 890 हैं, क्योंकि पिछले बजट में इनके लिए 4 करोड़ 90 लाख रूपये का प्रावधान हुआ था, लेकिन इस प्रावधान के चलते 15 मार्च तक खर्च हुआ सिर्फ 40 लाख। शायद इसलिए आदरणीय वित्त मंत्री जी ने इस बजट में उसका कोई उल्लेख नहीं किया है।

Support to Training and Employment Programme (STEP) for ten traditional sectors, इस कार्यक्रम के लिए पिछले बजट में प्रावधान किया गया 11. 5 करोड़, लेकिन खर्च किया गया मात्र 1.20 करोड़।

सर, यह वह सरकार है जो महिलाओं को महंगाई देती है, लेकिन उसके हाथों को काम नहीं देती। शायद इसीलिए जब आज सीमा जी Women Self-Help Group Development Fund के बारे में उल्लेख कर रही थीं, तब मैं यह सोच रही थी कि यह कॉर्पस मात्र 150 डिस्ट्रिक्ट्स में ही लागू किया जाएगा और उन सारे अन्य डिस्ट्रिक्ट्स को नदारद किया जाएगा, जहां पर महिलाएं रहती हैं और जहां उन्हें मदद की दरकार है। And, at times, I wonder whether that Scheme also will meet the fate of other schemes that I have enunciated today.

महोदय, आज तब मैं जिम की बात करती हूं, तकदीर की बात करती हूं तो उस महिला के बारे में सोचती हूं, जो महिला तो है, लेकिन विकलांग भी है। मैंने पिछले सत्र में भारत सरकार से प्रश्न किया था कि विकलांग महिलाओं की दरिद्रता को मिटाने के लिए क्या भारत सरकार के पास कोई योजना है, तो Ministry of Social Justice and Empowerment us मुझे जवाब दिया, that they have no specific scheme for poverty alleviation for persons with disability.

महोदय, Ministry of Housing and Urban Development ने मुझसे यह जरूर कहा कि ''स्वर्ण जयंती शहरी रोजगार योजना'' के तहत 30 प्रतिशत का आरक्षण दिया गया है वित people with disability, लेकिन यह भी बताया कि उस आरक्षण को इम्प्लिमेंट करने के लिए भारत सरकार ने एक रूपये का भी प्रावधान नहीं किया।

सर, यह वह देश है, जहां पर 2001 के सेंसेक्स के डेटा से पता चलता है कि हमारे देश में दो परसेंट की पापुलेशन विकलांग है, जिसमें से 45 परसेंट महिलाएं हैं और वे निशक्त महिलाएं हर रोज अपने आपको सशक्त करने के लिए किसी न किसी प्रकार के शोषण का शिकार होती हैं।

हमारे देश के आंकड़े यह बताते हैं कि देश में महिलाओं को टॉयलेट की कम और मोबाइल की ज्यादा चिंता है। जब मैंने यह वाक्य पढ़ा तब मैंने उड़ीसा की उस बेटी के बारे में सोचा, जिसको चार साल की उम्र में पोलियो हुआ था और जिसके पिता के निधन के बाद उसकी बूढ़ी मां ही उसका सहारा थी। लेकिन, जैसे–जैसे बेटी जवान होती गई और मां बूढ़ी, तब हर सुबह उस बेटी को अपनी गोद में उठाकर शौच के लिए खेत में ले जाने के लिए परिवार में कोई अन्य सदस्य बचा नहीं था। 28 साल की उस लड़की से जब इंदुमती राव नाम की एक एक्टिविस्ट मिली, तब उस लड़की ने कहा कि हर सुबह गांव का कोई न कोई पुरूष मुझे शौच के लिए खेत में लेकर जाता है, लेकिन कहीं न कहीं मात्र उस एक सुविधा के लिए मुझे शारीरिक शोषण के लिए अपनी स्वीकृति देनी पड़ती है। मैं आज इस सदन में यह कहना चाहती हूं कि 28 साल की उस विकलांग लड़की को अगर आज हम ऑप्शन दें कि उसे मोबाइल चाहिए या शौचालय, तो वह बेटी शौचालय जरूर पसंद करेगी।

उपसभापति महोदय, आज एक वरिष्ठ मंत्री इस सदन में बैठे हैं, जिनकी ओर जब बड़े आदरपूर्वक देखती हूं तो उनका वह वाक्य याद करती हूं कि हमारे देश के आंकड़े यह बताते हैं कि देश में महिलाओं को टॉयलेट की कम और मोबाइल की ज्यादा चिंता है। जब मैंने यह वाक्य पढ़ा तब मैंने उड़ीसा की उस बेटी के बारे में सोचा, जिसको चार

साल की उम्र में पोलियो हुआ था और जिसके पिता के निधन के बाद उसकी बूढ़ी मां ही उसका सहारा थी। लेकिन, जैसे–जैसे बेटी जवान होती गई और मां बूढ़ी, तब हर सुबह उस बेटी को अपनी गोद में उठाकर शौच के लिए खेत में ले जाने के लिए परिवार में कोई अन्य सदस्य बचा नहीं था। 28 साल की उस लड़की से जब इंदुमती राव नाम की एक एक्टिविस्ट मिली, तब उस लड़की ने कहा कि हर सुबह गांव का कोई न कोई पुरूष मुझे शौच के लिए खेत में लेकर जाता है, लेकिन कहीं न कहीं मात्र उस एक सुविधा के लिए मुझे शारीरिक शोषण के लिए अपनी स्वीकृति देनी पड़ती है। मैं आज इस सदन में यह कहना चाहती हूं कि 28 साल की उस विकलांग लड़की को अगर आज हम ऑप्शन दें कि उसे मोबाइल चाहिए या शौचालय, तो वह बेटी शौचालय जरूर पसंद करेगी।

उपसभापति महोदय, विपक्ष के नेता ने कहा था कि Budget is not a mere accounting statement. ये वे आंकड़े हैं, जो किसी का जीवन बदल सकते हैं, लेकिन इस आंकड़े में, जो बजट के माध्यम से प्रस्तुत हुए, उस लक्ष्मी का उल्लेख नहीं है, जिसे हर घर में मूरत बनाकर हम पूजते तो हैं, लेकिन सम्मान नहीं देते। The hon. Finance Minister, in fact, had quoted Shakespeare and said, which has been today repeated by many hon. Members, "I must be cruel only to be kind". Sir, Shakespeare has also said, "Women may fall when there is no strength in men". मैं वित्त मंत्री जी से उम्र और अनुभव में छोटी हूं। मैं उनका सम्मान करती हूं, लेकिन एक महिला होने के नाते उनके बजट का समर्थन नहीं करती, because the Finance Minister has not strongly applied himself to the upliftment of women in this Budget.

सर, जैसा प्रभा जी ने कहा कि बार–बार हम विरोध करते हैं, लेकिन अच्छी बातें या मांगें क्यों नही रखते, तो आज मैं आपके माध्यम से सरकार के सामने अपनी मांगें रखना चाहती हूं कि अगर वह वाकई इस देश में महिला को सशक्त बनाना चाहती हैं तो 'इंदिरा गांधी मातृत्व सहयोग योजना' को हर जिले में इम्प्लिमेंट करे, क्योंकि आज यूएन के आंकड़े बताते हैं कि पूरे विश्व में India and Nigeria are one-third contributors of maternal deaths. सर, अगर हम इस सदन के माध्यम से अपने देश की गर्भवती महिलाओं की सुरक्षा नहीं कर सकते, तो सशक्तिकरण पर भाषण देने का हममें से किसी को अधिकार नहीं है। मैं प्रभा जी से कहना चाहती हूं, कि अगर आप 'सेल्फ हैल्प ग्रुप्स' के माध्यम से महिला को सशक्त करना चाहती हैं, तो without any political or ideological differences, let us apply ourselves to uplifting and empowering women through self-help groups. गुजरात में हमने 'मिशन मंगलम' के माध्यम से 1500 करोड़ रूपये ढाई लाख सेल्फ हैल्प ग्रुप्स को देकर 25 लाख महिलाओं को यह सुविधा प्रदान की है। आपसे निवेदन है, महोदय, कि आप सरकार को मेरा यह निवेदन पहुंचाएं कि चाहे वह 'राष्ट्रीय महिला कोष' हो, 'स्वयंसिद्धि योजना' हो या 'प्रियदर्शनी योजना' हो, इन सभी कार्यक्रमों के लिए बजटरी एलोकेशन बढ़ाया जाए और इस एलोकेशन के इम्प्लिमेंटेशन को भी बड़ा क्लोजली मॉनिटर किया जाए। जहां तक Relief and rehabilitation of rape victims में एलोकेशन का सवाल है, तो उसमें मैं सीमा जी से बिल्कुल सहमत हूं कि इसके एलोकेशन को बढ़ाने की जरूरत है। But, I think, women will be duly served if the allocation is implemented effectively in a time-bound fashion andmonitored.

Sir, the Protection of Women from Domestic Violence Act 2005 में पारित हुआ था, लेकिन पैसे की कमी के चलते वह 2012 तक भी इम्प्लिमेंट नहीं हो पाया है। आज आपके माध्यम से मैं सरकार से निवेदन करती हूं कि Protection of Women from Domestic Violence Act के लिए सरकार बजटरी एलोकेशन करे, ताकि वह महिला, जो घरेलू हिंसा की शिकार है, उसको कहीं न कहीं हम सरकार के माध्यम से सहायता दे सकें।

सर, आज मेरी मांगों की लिस्ट लम्बी है। मैंने अपनी पार्टी से कहा था कि मुझे भी 33 परसेंट का समय ही चाहिए, ताकि मैं अपने तथ्य रख सकूं।

मैं जानती हूं कि सरकार ने बार–बार यह कहा कि 33 परसेंट आरक्षण political और coalition compulsion की वजह से नहीं दे पाए, लेकिन there is nothing that dissuades the Government from making 33 per cent of expenditure on women and children in this country.

सर, अंत में मैं यही कहूंगी कि महाभारत के शांति पर्व में भीष्म पितामह ने युधिष्ठिर से कहा था कि जिस समाज में नारी की कद्र न हो सके, उस समाज का पतन और नाश निश्चित है। आज आपके माध्यम से यूपीए के भीष्म पितामह, आदरणीय प्रणब बाबू को मेरा निवेदन है कि आप अपने माध्यम से नारी को इस देश में आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक तौर पर सुरक्षित रखें, वरना यूपीए के राज में महिला का नाश निश्चित है। ■

'यूपीए सरकार महिला विरोधी'

Hkkरतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक सोलन (हिमाचल प्रदेश) में 5 एवं 6 मई को आयोजित हुई। बैठक में पार्टी नेताओं ने केंद्र की यूपीए सरकार को महिला विरोधी करार देते हुए कहा कि वह महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन, सुरक्षा, स्वास्थ्य और सशक्तिकरण जैसे मुद्दों पर संवेदनहीन, अक्षम और विफल साबित हुई है। बैठक की अध्यक्षता भाजपा महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती स्मृति ईरानी ने की।

विभिन्न सत्रों में आयोजित इस बैठक में पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री जेपी नड्डा और मोर्चे एवं प्रकोष्ठों के राष्ट्रीय समन्वयक श्री महेंद्र पांडे सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं ने भी महिला कार्यकर्ताओं को संबोधित किया। इस मौके पर कार्यसमिति ने सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किए।

महिला मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यसमिति ने प्रस्ताव पारित कर कहा कि महंगाई, महिलाओं पर अत्याचार, महिला आरक्षण को टालने की कोशिश, कन्या भ्रूण हत्या का बढ़ता ग्राफ और 2012–13 के बजट में महिलाओं की घोर उपेक्षा आदि कई विषय इस सरकार के महिलाओं के प्रति अन्याय व उपेक्षा को दर्शाते हैं। महिला सुरक्षा पर पारित प्रस्ताव में कहा गया कि सरकारी आंकड़ों के अनुसार देश में हर पांच मिनट में एक महिला बलात्कार की शिकार हो रही है। आलम यह है कि 2011–12 में बलात्कार की शिकार महिलाओं को राहत व पुनर्वास के लिए 140 करोड़ रुपये का प्रावधान था, लेकिन इसमें से एक रुपया भी खर्च नहीं हो पाया।

इसी तरह महिला आरक्षण विधेयक पर कड़ी प्रतिक्रिया जताते हुए मोर्चा की राष्ट्रीय कार्यसमिति ने सरकार पर आधी दुनियां के साथ विश्वासघात का आरोप लगाया। कहा गया कि जिस विधेयक को भाजपा ने राज्यसभा में पारित करवाने में अग्रणी भूमिका निभाई, सरकार उस विधेयक को लोक सभा में पेश तक

न कर पाई।

इसके अलावा महिला स्वास्थ्य को लेकर भी सरकार की खिंचाई की गई और कहा गया कि भ्रूण हत्या के कारण प्रति वर्ष एक करोड़ बालिकाओं को जन्म लेने से वंचित कर दिया जाता है। इस कारण पैदा हो रहे लिंग असंतुलन की दिशा में भी सरकार कतई गंभीर दिखाई नहीं दे रही और इसके लिए राष्ट्रीय स्तर पर कोई ठोस नीति नहीं बनाई गई।

यही नहीं यूपीए की इंदिरा मातृत्व सहयोग योजना भी देश के हर जिले में लागू नहीं हो पाई। सरकार का जेंडर बजट मात्र ढोंग बनकर रह गया है और 55 फीसदी विवाहित महिलाएं एनीमिया की शिकार हैं। मोर्चा ने कहा कि देश के समक्ष कुपोषण बड़ी समस्या है, लेकिन नेशनल न्यूट्रीशियन मिशन के तहत आवंटित 100 करोड़ में से यूपीए सरकार ने कोई पैसा खर्च नहीं किया। मोर्चा ने सरकार को चेतावनी दी कि महिला विधेयक को अविलंब पारित किया जाए और महिला सशक्तिकरण के सार्थक प्रयास किए जाएं, अन्यथा परिणाम भुगते।

कार्यकारिणी बैठक के दूसरे दिन 6 मई को समापन सत्र को संबोधित करते हुए हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि हिमाचल में महिला सशक्तिकरण की दिशा में सराहनीय कार्य हुआ है और उन्हें राजनीति सहित प्रत्येक क्षेत्र में आगे लाने का प्रयास किया गया है। प्रदेश सरकार महिलाओं को सामाजिक व आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के लिए सतत प्रयास कर रही है। इस दिशा में कई नवीन योजनाएं कार्यान्वित की जा रही हैं।

उन्होंने कहा कि भाजपा ने ही पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव में महिलाओं को 50 फीसदी आरक्षण प्रदान

किया है, ताकि नीति निर्धारण और क्षेत्र के विकास में उनकी सहभागिता को बढ़ावा दिया जा सके। इसी का परिणाम है कि पंचायती राज चुनाव में 58 प्रतिशत महिलाएं चुनी गई हैं। सरकार ने सहकारी समितियों में भी महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने का निर्णय लिया है। इसी कड़ी में 300 करोड़ रुपये की दूध गंगा योजना मुख्य रूप से महिला प्रधान स्वयं सहायता समूहों द्वारा संचालित की जा रही है।

श्री धूमल ने देशभर से आई महिला मोर्चा की प्रतिनिधियों को बताया कि प्रदेश में बेटी है अनमोल, मातृ सेवा योजना, माता शबरी महिला सशक्तिकरण योजना, मुख्यमंत्री कन्यादान योजना इत्यादि योजनाएं महिला सशक्तिकरण के लिए ही कार्यान्वित की जा रही हैं। इसके अलावा सरकार लड़कियों को दसवीं कक्षा तक निशुल्क शिक्षा प्रदान करने के अलावा उन्हें प्रतिमाह 300 से लेकर 1500 रुपये तक की छात्रवृत्तियां प्रदान कर रही है। उन्होंने बताया कि स्कूली बच्चों को मुफ्त में वर्दी देने की योजना शुरू की है। इसी तरह मातृ सेवा योजना के तहत महिलाओं को निशुल्क संस्थागत प्रसव, फ्री एंबुलेंस सेवा व साल भर तक निशुल्क चिकित्सा परीक्षण की सुविधा भी उपलब्ध करवाई जा रही है।

इस मौके पर हिमाचल प्रदेश भाजपा के सह प्रभारी श्री श्याम जाजू ने राज्य सरकार की उपलब्धियों की सराहना करते हुए कहा कि देश के विभिन्न राज्यों में सत्तासीन भाजपा की सरकारें उत्कृष्ट कार्य कर रही हैं। उनकी उपलब्धियों की राष्ट्रीय स्तर पर सराहना हुई है। ■

'पीओके को बताया आजाद कश्मीर' : प्रभात झा

गत 24 अप्रैल 2012 को श्री प्रभात झा, संसद सदस्य द्वारा राज्यसभा में शून्यकाल में उठाया गया मामला

उपसभाध्यक्ष जी, मैं जिस मसले की ओर सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, वह बहुत गंभीर है। जम्मू–कश्मीर राज्य के कुछ क्षेत्रों में सीबीएसई की तीसरी कक्षा की किताब में पीओके को आजाद कश्मीर बताया जा रहा है और गिलगिट–बालिस्तान को उत्तरी क्षेत्र बताया जा रहा है। यह मामला 3 दिनों से बहुत जोर पकड़ रहा है। हम यह जानना चाहते हैं कि किसकी यह हिम्मत हुई कि उसने यह बात उस किताब में लिखी और लिखने के बाद उसमें संशोधन हुआ या नहीं हुआ, किसी ने इसकी जांच की या नहीं की? क्या यह मान लिया जाए कि पाक अधिकृत कश्मीर, आजाद कश्मीर हो चुका है? भारत का मानव संसाधान मंत्रालय क्या कर रहा था? भारत की शिक्षा को देखने वाले क्या कर रहे थे? हमारे दोनों सदनों ने सामूहिक संकल्प पारित किया है कि पाक अधिकृत कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग है और उसे हम कभी आजाद कश्मीर का दर्जा नहीं देंगे, उसके बाद यह हिम्मत किसने जुटाई है, यह हम जानना चाहते हैं? आर्मी स्कूल की सीबीएसई की तीसरी कक्षा की एक किताब में पाक–अधिकृत कश्मीर को आजाद कश्मीर बताया गया। किताब में पीओके का एक नक्शा दिखा गया है। यह कहा जा रहा है कि यह निजी प्रकाशक द्वारा प्रकाशित पुस्तक है। आप गूगल पर चले जाइए, वहां जो नक्शा दिखाया जाता है, वह अमरीका, चीन आदि सभी जगहों पर जाता है, गूगल में भारत के नक्शे में पीओके का हिस्सा ही गायब कर दिया गया है।

यह बात मैं इसलिए यहां रख रहा हूं कि यह बहुत गंभीर मामला है। हाल ही में Google Insight for search में भारत के नक्शे में पीओके का हिस्सा ही गायब कर दिया गया। यह कौन करता है, यह किसकी हिम्मत है?क्या भारत सरकार इसके लिए जिम्मेदार नहीं है? क्या भारत सरकार यह मानने के लिए तैयार हो गई है कि वह आजाद कश्मीर हो गया है? यह कितनी बड़ी बात है कि अब हमारे सिलेबस में यह पढ़ाया जाएगा कि कश्मीर, जिसके लिए हम रात–दिन लड़ाई लड़ रहे हैं, संसद के दोनों सदनों में प्रस्ताव पारित होता है, उसके बाद भी अगर यह बात आती है, तो मुझे लगता है कि भारत सरकार को पूरी जिम्मेदारी से इसका जवाब देना चाहिए कि सीबीएसई की तीसरी कक्षा की पुस्तक में यह बात कैसे आई तथा Google Insights for Search में यह नक्शा कैसे आता है, जिसमें भारत का अविभाज्य अंग कश्मीर जिस पर एक–एक बच्चा खड़ा हो सकता है, 120 करोड़ की आबादी एक स्वर से कहती है कि कश्मीर हमारा अविभाज्य अंग है, उसको इस साजिश के तहत कैसे आजाद कश्मीर कहा जाता है?

मैं जानना चाहता हूं कि क्या भारत सरकार अपनी जिम्मेदारी से मुकर जाएगी, क्या भारत सरकार इस बात का जवाब नहीं देगी, क्या उस किताब को जब्त नहीं किया जाएगा, क्या आने वाली पीढ़ी को यही पढ़ाया जाएगा? हम इस शर्मनाक घटना की निंदा करते हैं। यह हमारा कठोर प्रण है कि जम्मू–कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग है और दोनों सदनों ने जो संकल्प दोहराया है, उस पर भारत सरकार अमल करे और ऐसी किताब को तत्काल जब्त करे, यह मेरा निवेदन है।■

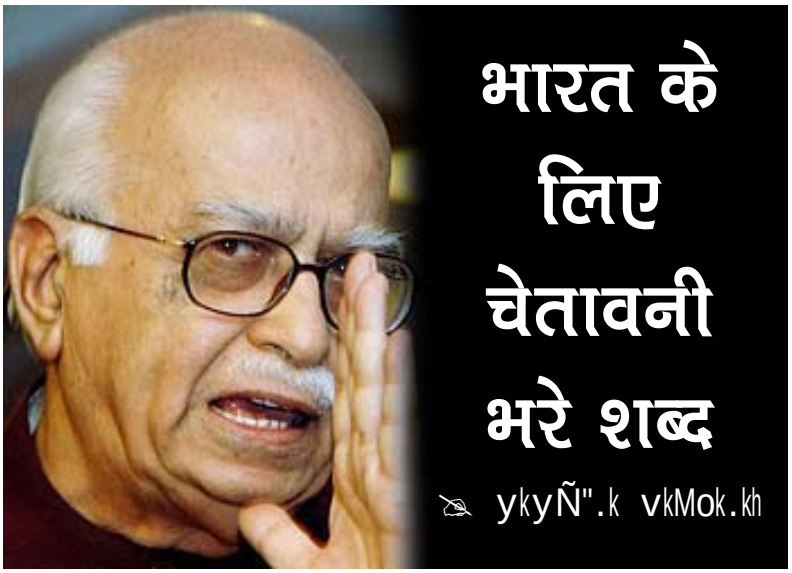

मेरे निजी पुस्तकालय में हाल ही में एक नई ग्लॉसी पिक्चर पुस्तक जुड़ी है– "100 सिटीज ऑफ दि वर्ल्ड : ए जर्नी थ्रू दि मोस्ट फेसिनेटिंग सिटीज अराउण्ड दि ग्लोब"। इस सौ की सूची को मैं देख रहा था तो महाद्वीपानुसार भारत की राजधानी दिल्ली का नाम न देखकर मैं दंग रह गया। एशिया के 20 शहरों की सूची में जिन दो भारतीय शहरों का उल्लेख था वे हैं कोलकाता और मुंबई।

भारतीय पाठकों के लिए एक ज्यादा रोचक पुस्तक इस सप्ताह मेरे पुस्तकालय में और जुड़ी है, यह पुस्तक है रूचिर शर्मा की, जो मॉरगन स्टानले निवेश प्रबन्धन के इमर्जिंग मार्केट इक्वटीज एण्ड ग्लोबल माक्रो के प्रमुख हैं। ब्रेकआऊट नेशन्स शीर्षक की इस पुस्तक में, न्यूयार्क स्थित लेखक ने लिखा है "पिछले दशक में आश्चर्यजनक रूप से विश्व के शानदार उभरते बाजारों की तेजी से वृद्धि अपनी समाप्ति की ओर है। आसान धन और आसान वृद्धि का युग समाप्त हो गया है। विशेष रूप से चीन शीघ्र ही सुस्त पड़ जाएगा, लेकिन जरूरी नहीं कि उसका स्थान ब्राजील, रूस या भारत लेगा, सभी की अपनी कमजोरियां और कठिनाइयां पिछले दशक में बढ़ी हुई अपेक्षाओं और उभरते बाजार उन्माद (मार्केटमेनी) में अक्सर उपेक्षित हो जाती हैं।"

यह पुस्तक "घूस–चालित मुद्रास्फीति" और क्रोनी कैपिटल्जम की उन कमजोरियों और कठिनाइयों को रेखांकित करती है जो भारत की उच्च अपेक्षाओं के लिए अवरोधक हो सकती हैं। यूपीए शासन में सामने आए एक के बाद एक घोटालों की श्रृंखला का संदर्भ देते हुए लेखक लिखते हैं कि जब उन्होंने न्यूजवीक की कॅवर स्टोरी में इनके बारे में लिखा तो उन्हें 'खेल बिगाड़ने वाला' (पार्टी स्पायलर) वर्णित किया गया। उच्चस्तरीय सरकारी अधिकारियों ने शर्मा को बताया "इस तरह का क्रोनिज्म विकास के लिए एक सामान्य कदम है। साथ ही उन्नीसवीं शताब्दी के अमेरिका के लुटेरे शक्तिशाली उद्योगपतियों का उदाहरण बताया गया।" "प्रधानमंत्री सिंह से निजी तौर पर भ्रष्टाचार समस्या के बारे में पूछा गया तो बताते हैं उन्होंने लोगों को बताया कि वे इस बारे में बातें कर भारत की छवि न बिगाड़ें।"

हमारी समस्याओं से जुड़ा यह विशेष अध्याय यूरोप की उन्नीसवीं शताब्दी के सम्मोहन के साथ भारत के चिर–परिचित जादू शो – 'दि रोप ट्रिक' से शुरू होता है। उल्लेखनीय है कि इस अध्याय का शीर्षक दिया गया "दि ग्रेट इण्डियन होप ट्रिक"।

भारतीय उद्यमियों द्वारा विदेशों में किए जा रहे बढ़ते निवेश का संदर्भ देते हुए, रूचिर शर्मा लिखते हैं: "जैसे–जैसे उभरते राष्ट्रों की कम्पनियां विदेशों में अपने हितों के विस्तार की शुरूआत करती हैं, जो इसे सामान्यतया समूचे देश द्वारा एक बड़े कदम के रूप में माना जाता है। लेकिन भारत में यह कदम बताता है कि अनेक कम्पनियां जो विदेशों में जा रही हैं वे देश के बाजार में व्यापार करने की बाधाओं को टालने के उद्देश्य से जा रही हैं। दिल्ली और मुंबई में व्यवसायी कड़वाहट से भारत में नया व्यवसाय शुरू करने की कीमतों में व्यापक बढ़ोतरी की शिकायत कर रहे हैं जोकि समय के साथ सरकार को चढ़ावे में हुई बेतहाशा वृद्धि के फलस्वरूप हुई है। भारतीय व्यवसायियों द्वारा किए जाने वाला निवेश सन् 2008 के जीडीपी का 17 प्रतिशत था जो अब 13 प्रतिशत रह गया है।

ऐसे समय में जब भारत को जरूरत है कि उसके व्यवसायी देश की 8 से 9 प्रतिशत (विदेशी निवेश कुल अपेक्षित से काफी कम है) वृद्धि दर के लिए उत्साहपूर्वक अपने देश में निवेश करें, वे बाहर की ओर देख रहे हैं। विदेशों में सभी भारतीय कम्पनियों का कारोबार कम्पनियों के कुल मुनाफे में पांच वर्ष के मात्र 2 प्रतिशत की तुलना में आज 10 प्रतिशत है। घरेलू बाजार की संभावनाओं के चलते भारतीय कम्पनियों को विदेशों में विकास के लिए भागने की जरूरत नहीं है। सन् 2010

में प्रत्येक तीसरे भारतीय परिवार की स्थानीय स्तर के अनुसार, एक मध्यमवर्गीय आय 2,000 और 4,200 डॉलर के समान थी, जोकि 2002 से 22 प्रतिशत से ऊपर थी, लेकिन भारत की शीर्ष पचास कम्पनियों की आधी से ज्यादा आय अब "बाहरी" (outward facing) या निर्यात, वैश्विक जिंस मूल्यों और अंतरराष्ट्रीय अधिग्रहणों पर निर्भर है।" हालांकि प्रमुख आर्थिक विचारकों के समूह के साथ अपने संवाद (आज के इण्डियन एक्सप्रेस में प्रकाशित) में रूचिर शर्मा भारत के बारे में ज्यादा आशावादी हैं।

◆◆◆

इन दिनों विशेष रूप से एक सेक्टर ज्यादा खराब हालत में है, और वह है एयरलाइन्स सेक्टर – आप एयर इण्डिया स्टाफ–पायलट, एयर होस्टेस या किसी अन्य से बात करिए– तो अंतहीन शिकायतें सुनने को मिलेंगी। और यह वही एयरलाइन है जिसमें सांसद बनने के बाद पहली बार जब 1970 में मैंने यात्रा की थी तो पूरी दुनिया में इसकी शानदार प्रतिष्ठा थी। किंगफिशर जैसी प्राइवेट एयरलाइन्स भी गम्भीर संकट का सामना कर रही है। अतः यह जानकर हर्ष हुआ कि हाल ही में बना इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा को विश्व में छठा अच्छा हवाई अड्डा और एक निश्चित विशेषीकृत श्रेणी में दूसरा अच्छा हवाई अड्डा माना गया हैं। यह मूल्यांकन एयरपोर्ट काऊंसिल इंटरनेशनल नाम की विश्वव्यापी संस्था ने किया है जिसके 575 सदस्य 179 देशों में 1633 से ज्यादा हवाई अड्डों का संचालन करते हैं। इस नवनिर्मित हवाई अड्डे जो घरेलू और विदेश जाने वाले यात्रियों द्वारा उपयोग किया जाता है, से गुजरते हुए वहां पर 12 मुद्राओं, जो सूर्य नमस्कार की सर्वविदित क्रियाएं हैं, को अपने में समेटी हुई शिल्प कृति को देखकर मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ। यह शिल्पकार जयपुर के आयुष कासलीवाल हैं। जी. एम.आर. के जी. सुब्बाराव, जिन्होंने इसे लगवाने तथा उस कलाकार जिसने इसे बनाया – का हार्दिक अभिनन्दन।

इससे मुझे स्मरण आया कि जब मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह ने प्रदेश के विद्यालयों में सूर्य नमस्कार के व्यापक कार्यक्रम को शुरू किया तो कुछ संकुचित राजनीतिज्ञों ने कैसा बवाल किया था। इस अभ्यास का विरोध करने वालों का कहना था कि राज्य सरकार का कदम 'सेकुलर विरोधी' है। ऐसा माना जाता है कि इस वर्ष के जनवरी से लेकर अब तक प्रदेश के 6000 विद्यालयों में लाखों से ज्यादा विद्यार्थियों ने सूर्य नमस्कार किया है।

घोटालों की कृांखला का संदर्भ देते हुए लेखक लिखते हैं कि जब उन्होंने न्यूजवीक की कॅवर स्टोरी में इनके बारे में लिखा तो उन्हें 'खेल बिगाड़ने वाला' ञपार्टी स्पायलरफ वर्णित किया गया। उच्चस्तरीय सरकारी अफ्रिकारियों ने शर्मा को बताया ङ्कइस तरह का ट्रोनिज्म विकास के लिए एक सामान्य कदम है। साथ ही उन्नीसवीं शताब्दी के अमेरिका के लुटेरे शत्तिशाली उद्योगपतियों का उदाहरण बताया गया।ङ्ख

टेलपीस

इस ब्लॉग की शुरूआत रूचिर शर्मा की पुस्तक ब्रेकआउट नेशन्स के संदर्भ से हुई है। इस पुस्तक की प्रस्तावना फूहड़ पतनोन्मुखता पर एक कटु टिप्पणी है, जो लगता है यहां के धनाढयों की जीवन शैली को संक्रमित कर रही है। इस शुरूआती पैराग्राफ का नमूना निम्न है :

बहुत समय पहले दिल्ली के 'फार्म हाऊसों' को किसानों ने छोड़ दिया है और यद्यपि उनके नाम अभी भी हैं, इन्हें अब उच्च वर्ग के सप्ताहांत एकांत स्थान (रिट्रीट) के रूप में वर्णित किया जाता है, शहर की सीमाओं पर प्लेग्राऊण्ड जहां बेतरतीब गर्दभरी गलियां गरीब गांवों की हवाएं और अचानक फैले हुए गार्डन और फव्वारों से युक्त ठाठदार बंगले हैं। एक मामले में, मैंने एक ऐसे गार्डन को देखा जहां छोटी रेलनुमा दौड़ रही हैं यह दिल्ली का "हैम्पटन" है, जहां शहर की पार्टियों को इवेंट प्लानर्स ऑस्कर नाईट, ब्रॉडवे, लास वेगास, यहां तक कि घर की याद करने वालों के लिए पंजाबी गांव, वहीं की वेशभूषा वाले वेटरों सहित फिर से बना देंगे।

सन् 2010 की एक धुंधली देर रात को मुझे ऐसी ही एक प्रसिद्ध ह्रासोन्मुख जश्न में जाने का मौका मिला, जहां वलेट्स (चाकर) ब्लैक बेन्टलेस और रेड पोर्सिच को संभाल रहे हैं, और मेजबान ने मुझे जापान से मंगाए गए कोबे गोमांस, इटली के कुकरमुत्ते, अजरबैजान से सफेद व्हेल को चखने का निमंत्रण दिया। धड़कते संगीत में बात कर पाना कठिन था, लेकिन मैंने किसी तरह बीस वर्ष की आयु के एक नौजवान–फार्महाऊस के किसी वाशिंदे के पुत्र से गपशप करनी शुरू की, जो अलग ही किस्म का, अपने पिता के एक्सपोर्ट बिजनेस में कार्यरत, तंग काली कमीज, 'जैल' से जमे बाल वाला था। यह सुनिश्चित करने पर कि मैं न्यूयार्क स्थित निवेशक हूं और यहां निवेश अवसरों की तलाश में आया हूं, उसने कंधे झटकते हुए टिप्पणी की – "ठीक है, और पैसा कहां जाएगा?"

"और पैसा कहां जाएगा?" आधी रात के आसपास मुख्य भोजन लेने से पूर्व मैं पार्टी से निकला, लेकिन उक्त टिप्पणी मेरे साथ थी। ■

संप्रग-II के तीन साल : घोटालों से जनता बेहाल

✍ Mk- f'ko 'kfDr cDlh

संप्रग सरकार अपने दूसरे कार्यकाल के तीन वर्ष 22 मई 2012 को पूरा कर रही है। प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व वाली कांग्रेसनीत केन्द्र सरकार के खाते में दिखाने के लिए केवल असफलता ही असफलता है। 'संयुक्त प्रगतिशील सरकार' अब तक कोई 'प्रगति' दिखा नहीं पाई बल्कि इसने देश को अपनी 'नीतिगत पंगुता' एवं उलझी हुई प्राथमिकता के चलते अनिश्चित भविष्य की ओर धकेल दिया है। जबकि पूरा देश सरकार की दुर्दांत विफलताओं से आक्रांत महसूस कर रहा है, संप्रग किसी प्रकार से सत्ता से चिपके रहने की जुगाड़ में है। 'सत्ता की राजनीति' की वेदी पर नैतिकता एवं जीवन मूल्यों की बलि ली जा रही है। पिछले तीन वर्षों में पूरे देश ने संप्रग सरकार नैतिकता की गिरावट को हर दिन देखा है। 2009 के आम चुनावों से ठीक पूर्व 'नोट के बदले वोट' घोटाले को पूरे देश ने अपनी आंखों से देखा था पर कांग्रेस तभी लोगों के आंखों पर पर्दा डालने में किसी प्रकार सफल हो गई थी। अपने दूसरे कार्यकाल में कांग्रेस नीत संप्रग सरकार पूरी तरह से बेनकाब हो चुकी है और अब इसके चेहरे पर से मुखौटा हट चुका है।

देश में हो रहे राजनीतिक संस्कृति में ह्रास का बुरा असर संवैधानिक संस्थाओं पर पड़ रहा है। राजनीतिक लाभ के लिए इन संस्थाओं का राजनीतिकरण किया जा रहा है। बढ़ते राजनीतिक हस्तक्षेप और सिद्धांतहीन नौकरशाही के कारण लोगों का विश्वास व्यवस्था पर से उठ रहा है। कांग्रेसनीत संप्रग सरकार के संरक्षण में बढ़ते भ्रष्टाचार के कारण स्थिति और भी बदतर होती जा रही है। अर्थव्यवस्था कुप्रबंधन के दौर से गुजर रहा है, संवैधानिक संस्थाओं का पतन जारी है, संघीय ढांचे पर हमले हो रहे हैं तथा लोकतंत्र को तानाशाही में बदलने का प्रयास चल रहा है।

जनाकांक्षाओं एवं जन–अपेक्षाओं से विश्वासघात का कांग्रेसी खेल अब उस पर भारी पड़ रहा है, लोग अब इसके बहाने और बहकावे में नहीं आने वाले, अब लोग उसकी नीयत में खोट को स्पष्ट तौर पर देख सकते हैं। अल्पसंख्यक तुष्टिकरण की इसकी नीति तथा उत्तर प्रदेश चुनावों में चुनाव आयोग के दिशानिर्देशों के विपरीत संप्रग सरकार के मंत्रियों के द्वारा की गई बयानबाजी कांग्रेस को महंगी पड़ी है। यहां तक कि गोवा में भी कांग्रेस को हार का मुंह देखना पड़ा जहां अल्पसंख्यक समुदाय ने भाजपा के लिए वोट किया। एक तरफ जहां पंजाब में वोटरों ने कांग्रेस को नकारा वहीं महाराष्ट्र और दिल्ली में हुए नगर–निगम चुनावों में भी इसे मुंह की खानी पड़ी। कांग्रेस–नीत संप्रग सरकार जनता का विश्वास खो चुकी है और अब यह येन–केन–प्रकारेण सत्ता में बनी रहना चाहती है।

'संयुक्त प्रगतिशील सरकार' अब तक कोई 'प्रगति' दिखा नहीं पाई बल्कि इसने देश को अपनी 'नीतिगत पंगुता' एवं उलझी हुई प्राथमिकता के चलते अनिश्चित भविष्य की ओर फ्राकेल दिया है।

भ्रष्टाचार एवं घोटाले : संप्रग सरकार का चरित्र

यदि कांग्रेसनीत संप्रग सरकार ने देश को कुछ दिया है तो वह है बढ़ता भ्रष्टाचार एवं अनगिनत घोटाले। पिछले तीन वर्षों में घपले, घोटाले और सरकारी धन की लूट मानो हर दिन की बात हो गई है, कोई भी ऐसा दिन नहीं बीतता जब कोई घोटाला उजागर नहीं होता। ऐसा लगता है कि पूरी व्यवस्था ही नाक तक भ्रष्टाचार में डूब चुकी हो तथा लूट एवं घपलों पर जी रही हो। राष्ट्रमण्डल खेल, आदर्श सोसाइटी, 2जी स्पेक्ट्रम, इसरो–देवास करार, कोयला आवंटन जैसे अनगिनत घोटाले सामने आ चुके हैं। स्थिति लगातार बद से बदतर होती जा रही है लेकिन भ्रष्टाचार के कैंसर का ईलाज करने की कोई इच्छाशक्ति सरकार में दिखाई नहीं दे देती। हालांकि आम जनता को हर दिन भ्रष्टाचार का सामना करना पड़ता है परन्तु ऊंचे स्थानों पर उजागर हो रहे बड़े–बड़े घोटालों से पूरा देश स्तब्ध है। ऐसा लगता है कि भ्रष्टाचार का दीमक पूरी व्यवस्था को अन्दर से खोखला कर चुका है और यह ढांचा कभी भी भरभरा कर गिर सकता है। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री अशोक चह्वाण को आदर्श सोसाइटी घोटाले में नामित होने के कारण कुर्सी छोड़ना पड़ा। सुरेश कलमाड़ी को कांग्रेस कार्यसमिति से बाहर का रास्ता दिखाया जाना और जेल जाना। केन्द्रीय मंत्री ए. राजा को त्यागपत्र देना तथा जेल यात्रा करना, यह सब सर्वोच्च न्यायालय के कारण हुआ, यहां तक की सर्वोच्च न्यायालय में प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह की चुप्पी पर भी सवाल खड़े कर दिए गए। भ्रष्टाचार के मामले पर सरकार गंभीर नहीं तथा केवल दिखावे के लिए आधे मन से कदम उठाती है– यह बात अब लोग समझने लगे हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो भ्रष्टाचार अब व्यवस्था का अविभाज्य अंग बन चुका है। कुछ मंत्री आयेंगे और कुछ जायेंगे, कुछ अधिकारी बर्खास्त किए जाएंगे पर भ्रष्टाचार बदस्तूर जारी रहेगा। लोगों को कोई रास्ता नहीं दिख रहा–

ऐसा लगता है कि भ्रष्टाचार ही सदाचार बन गया है।

भ्रष्टाचार और लोकपाल की मांग

कांग्रेसनीत संप्रग सरकार के संरक्षण में बढ़ते भ्रष्टाचार के कारण आमजन सरकार से कार्रवाई की मांग करते हुए सड़कों पर उतर आये। कहा जाने लगा कि समय आ गया है जब केवल दिखावे से काम नहीं चलेगा। व्यवस्था में सुधार एवं व्यवस्था–परिवर्तन की मांग की जाने लगी है। लेकिन इसके लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति एवं दृढ़ निश्चय वाले नेतृत्व की आवश्यकता है जो कांग्रेसनीत संप्रग सरकार के पास नहीं है। लोकपाल विधेयक की मांग की जाने लगी, लोग राजनीतिज्ञों और नौकरशाहों पर अंकुश लगाना चाहते हैं परन्तु कांग्रेस इस मांग के विरोध में आ खड़ी हुई है। लोकपाल विधेयक के लिए बढ़ते जनसमर्थन को देखकर पहले तो कांग्रेसनीत संप्रग ने अन्ना हजारे एवं इसकी टीम के साथ मिलकर एक समिति की घोषणा की परन्तु बाद में अपनी बात से मुकर कर अन्ना हजारे को गिरफ्तार कर तिहाड़ जेल में डाल दिया गया। लेकिन लोगों के सड़क पर उतर आने के कारण विधेयकों को संसद में लाना पड़ा परन्तु इस विधेयक का स्वरूप ऐसा था कि यह अनगिनत विवादों में उलझ कर रह गया। कांग्रेस नीत संप्रग शुरू से ही लोकपाल के समर्थन में नहीं थी और इस पूरे विचार के ही विरूद्ध थी। यह अब स्पष्ट है कि कांग्रेस भ्रष्ट व्यवस्था को कायम रखना चाहती है तथा कोई भी सुधार करने में इसकी दिलचस्पी नहीं है।

आर्थिक नीतिः कुप्रबंधन एवं कुव्यवस्था की शिकार

आर्थिक कुव्यवस्था एवं कुप्रबंधन ने न केवल सुधार की रफ्तार को धीमा किया है बल्कि देश के विकास को भी रोक दिया है। जहां एक ओर श्री अटलबिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली राजग सरकार में देश विकास की ओर बड़ी छलांग लगाने की तैयारी कर रहा था, और तब विकास दर 8.4 प्रतिशत से तक पहुंच गई थी, जो अब नीचे आकर अब 6–7 प्रतिशत के बीच रह गई है। अर्थव्यवस्था के अन्य पहलू भी बहुत उत्साहजनक नहीं हैं तथा ऐसा लगता है देश की विकास दर अटक चुकी है और निकट भविष्य में इससे उबर पाना मुश्किल है। औद्योगिक उत्पादन में गिरावट, पेट्रोलियम उत्पादों में मूल्यवृद्धि, खाद सब्सिडी में कटौती, लचर कर–संग्रह बढ़ता राजस्व घाटा तथा रुपये के मूल्य में गिरावट जैसे कारकों ने भारतीय अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव डाला है। राजनीतिक दलों के बीच आम सहमति बनाने में संप्रग सरकार की असफलता के कारण आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया थम सी गई है तथा 'नीतिगत पंगुता' से जड़वत् सरकार के कारण आर्थिक विकास दर अटक गया है। 'नीतिगत पंगुता' ने अर्थव्यवस्था पर गहरा असर डाला है जिससे विकास दर पर भारी दबाव बढ़ा है।

कमरतोड़ महंगाई

कांग्रेसनीत संप्रग सरकार और बढ़ती महंगाई एक–दूसरे के पर्याय बन चुके हैं। ना केवल संप्रग सरकार महंगाई रोकने में विफल रही है बल्कि अनेकों बार इसने ऐसी नीतियां बनाई जिससे भयंकर मूल्यवृद्धि एवं कमरतोड़ महंगाई का सामना जनता को करना पड़ा है। उससे भी बड़ी दुर्भाग्यजनक बात यह है कि व्यापक विरोध एवं कड़ी आलोचना के बावजूद संप्रग सरकार इस ओर से अपनी आंखें बंद किए रही तथा जनता पर महंगाई की मार पड़ती रही। लोग अब संप्रग सरकार को 'महंगाई बढ़ाओ सरकार' कहने लगे हैं। सरकार के दावों के विपरीत इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि जरूरत के सामानों को बाजार के सट्टेबाजों एवं मुनाफाखोरों पर छोड़ दिया गया हैं। महंगाई के लिए उत्पादन, वितरण तथा मानसून जैसे कारक जिम्मेदार नहीं जिसे अर्थव्यवस्था के सिद्धांतों के अन्तर्गत समझा जा सकता है, महंगाई के लिए बाजार एवं इसके सट्टेबाज, कालाबाजारी एवं मुनाफाखोर जिम्मेदार हैं जो सरकार की गलत नीतियों का लाभ उठा रहे हैं। विडम्बना यह है कि यह सब देखते हुए भी सरकार चुप्पी साधे हुए है और महंगाई पर लगाम कसने के लिए कोई कदम नहीं उठा रही। व्यापक भ्रष्टाचार और टैक्स के भारी बोझ ने आम आदमी के घर के बजट पर भयंकर प्रहार किए हैं। इससे अमीर और गरीब के बीच की खाई बढ़ी है और समाज में एक बड़ा वर्ग और अधिक गरीब और वंचित होता जा रहा है।

संघीय ढांचे पर हमला

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से ही कांग्रेस ने लगातार देश के संघीय ढांचे पर प्रहार करना जारी रखा है। येन–केन प्रकारेण यह राज्यों के संविधान प्रदत्त शक्तियों में हस्तक्षेप करती रही है। पिछले तीन वर्षों में कांग्रेसनीत संप्रग सरकार ने गैर–कांग्रेस, गैर–संप्रग राज्य सरकार के साथ भेदभाव की नीति अपना रखी है। तथा उनको निशाना बनाया है। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जब राज्य विधानसभा द्वारा पारित विधेयक को या तो राज्यपाल अथवा राष्ट्रपति की सहमति के अभाव में लटकाये रखा गया है। गुजरात, मध्य प्रदेश तथा छत्तीसगढ़ को अभी भी इन्हीं कारणों से आतंक विरोधी तथा अपराध नियंत्रण के सशक्त कानून से वंचित रखा गया है। इन राज्यों के विधानसभा द्वारा पारित विधेयक अभी तक लम्बित हैं जबकि कांग्रेस–एनसीपी शासित महाराष्ट्र में ऐसा ही कानून पिछले कई वर्षों से लागू है। एक ओर जहां मूल्य नियंत्रण के नाम पर गैर–कांग्रेस–गैर–संप्रग राज्यों में कालाबाजारी के नाम पर छापे मारे जा रहे हैं, तथा गुजरात में निवेश करने वालों की आयकर विभाग द्वारा नोटिस जारी किया जा रहा है वहीं दूसरी ओर वित्तीय आवंटन में भी इन राज्यों के साथ भेदभाव किया जा रहा है। मध्यप्रदेश में उत्पादित कोयले की राज्य से बाहर भेजे जा रहे हैं जबकि राज्य के ऊर्जा–संयंत्र कोयले की भारी कमी झेल रहे हैं।

कांग्रेसनीत संप्रग सरकार के राज्यों के अधिकार क्षेत्र में हस्तक्षेप का एक ज्वलंत उदाहरण राष्ट्रीय आतंकवाद नियंत्रक केन्द्र (एनसीटीसी) को राज्यों

पर लादने के इसके प्रयास हैं। अब तक अनेक राज्यों जिनमें संप्रग के घटक भी शामिल हैं के द्वारा इसके विरोध के फलस्वरूप कांग्रेसनीत संप्रग इसमें सफल नहीं हो पाई है।

सीबीआई का दुरुपयोग एवं संस्थाओं का अवमूल्यन

कांग्रेस अपने प्रतिद्वन्द्वियों एवं विरोधियों को नियंत्रित करने एवं सबक सिखाने में सीबीआई को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल कर रही है। जितनी ही बार संप्रग के घटक सरकार को धमकियां देते हैं, सीबीआई का दुरुपयोग कर कांग्रेस सरकार को बचा लेती है। ऐसा अनेकों बार देखा गया है कि जिनके विरुद्ध सीबीआई जांच कर रही होती है, संकट के समय पर वे सरकार को जीवनदान देने में महती भूमिका निभाते हैं। उच्च आदर्शों को स्थापित करने वाली दक्षता प्राप्त एक संस्था के रूप में जिसे अपनी पहचान बनानी चाहिए थी वह आज कांग्रेसनीत संप्रग सरकार के कारण एक सहमी हुई, अक्षम, दब्बू एवं अविश्वसनीय संस्था का शक्ल ले रही है जिसका राजनीतिक फायदे के लिए दुरुपयोग किया जा सकता है। चाहे 1984 सिख दंगों में आरोपी जगदीश टाइटलर और सज्जन कुमार जैसे कांग्रेस नेताओं का मामला हो या राष्ट्रमण्डल खेल, 2जी स्पेक्ट्रम, आदर्श सोसाइटी जैसे घोटाले, सीबीआई को संदेह से परे नहीं माना जा सकता।

इस संदर्भ में क्वात्रोच्ची का मामला एक बड़ा उदाहरण है। क्वात्रोच्ची जो बोफोर्स मामले में आरोपी है, अर्जेंटिना में इंटरपोल रेड कॉर्नर नोटिस के तहत गिरफ्तार कर लिया गया। पूरे देश को इस बारे में अंधेरे में रखा गया पर मीडिया ने इस मामले को लीक कर दिया। इसके बावजूद सीबीआई क्वात्रोच्ची का प्रत्यर्पण नहीं करा पाई। सीबीआई द्वारा क्वात्रोच्ची के प्रत्यर्पण का प्रयास मात्र एक छलावा था और यह तब और भी स्पष्ट हो गया जब सीबीआई ने अर्जेंटीना के न्यायालय में अपील करने से इंकार कर दिया। 2005 में भी क्वात्रोच्ची को बोफोर्स दलाली में प्राप्त समझे जाने वाले 21 करोड़ के खाते को लंदन में 'डिफ्रीज' करने की अनुमति सीबीआई ने ही दी थी। सीबीआई ने जिस तरह से इस मामले में कार्रवाई की उससे स्पष्ट तौर पर लगता है कि वह क्वात्रोच्ची की मदद कर रही थी। अब तो क्वात्रोच्ची के खिलाफ जारी इंटरपोल रेड कॉर्नर नोटिस भी वापस ले लिया गया है।

क्वात्रोच्ची के अलावा 1984 सिख दंगों में आरोपित लोगों, मुलायम, लालू, मायावती और राबड़ी देवी के खिलाफ मामलों में सीबीआई ने जो रवैय्या अपनाया है वह चौंकाने वाला है। सीबीआई के अलावा चुनाव आयोग, सीवीसी, राज्यपाल जैसी अन्य संवैधानिक संस्थाओं पर भी प्रश्न उठते रहे हैं। ऐसे विवाद पूरी लोकतांत्रिक व्यवस्था पर विपरीत प्रभाव डाल सकते हैं तथा जनता का विश्वास पूरी व्यवस्था पर से उठ सकता है। जब तक राजनीतिक वर्ग येन–केन–प्रकारेण सत्ता से चिपके रहने की जुगाड़ में व्यस्त रहेगा, दीर्घकालिक राष्ट्रीय हित तो आहत होता ही रहेगा।

आंतरिक सुरक्षा की अनदेखी

हाल ही में उड़ीसा में इटली के दो नागरिक, एक बीजद विधायक तथा छत्तीसगढ़ में एक कलेक्टर का अपहरण नक्सल–माओवाद आतंक के बढ़ते खतरे को फिर से एक बार देश के सामने ला खड़ा किया है। सुरक्षा बलों पर लगातार हमले, लैंडमाइंस तथा छद्म हमलों में सुरक्षा बलों एवं निरीह नागरिकों की हत्याओं ने पूरे देश को आहत किया है। नक्सल–माओवादी गुट बेहिचक और बेधड़क मनमाने तरीके से हमले कर रहे हैं। जिस तरह के अमानवीय तौर–तरीकों एवं लोमहर्षक ढंग से हत्या की घटनाओं को अंजाम दिया जाता है उससे कम्युनिज्म का घिनौना एवं भयावह चेहरा उजागर हो रहा है। भारत राज्य में विरुद्ध युद्ध लड़ने का दावा करने वाले नक्सल–माओवादी गुटों का प्रभाव देश के दस राज्यों के 180 जिलों में फैल चुका है जिसके अंतर्गत देश का 40 प्रतिशत भूभाग आता है। ये मुख्यतः नेपाल से आंध्रप्रदेश तक के 9200 वर्ग कि.मी. में फैले हुए हैं जिसे 'रेड कॉरीडॉर' अथवा 'लाल गलियारा' के नाम से जाना जाता है, हाल के वर्षों में इन्होंने अपने–आपको अत्याधुनिक शस्त्रों से लैस किया है तथा भारी संख्या में युवाओं को राष्ट्रीय मुख्यधारा से भटका भर्तीकर उन्हें प्रशिक्षण दे रहे हैं। 'लेवी' के रूप में एक ओर जहां करोड़ो–अरबों की उगाही हो रही है वहीं कंगारू न्यायालयों के माध्यम से वे समानान्तर न्याय व्यवस्था और प्रशासन भी चला रहे हैं। वास्तव में यदि देखा जाए तो एक बड़े भूभाग में वे समानांतर सरकार चला रहे हैं।

सरकार नक्सल–माओ आतंक को प्रभावी तरीके से क्यों नहीं रोक पा रही है एक ऐसा प्रश्न है जो अब हर देशवासी को साल रहा है। देश के वामपंथी प्रवर्तकों ने विकास में हुई इन क्षेत्रों की अनदेखी के फलस्वरूप नक्सल–माओवाद के बढ़ते प्रभाव के संदर्भ में इनके हिंसक रास्ते को सही बताने का प्रयास किया है, लेकिन असली बात तो यह है कि नक्सल–माओवाद ने सरकारी योजनाओं को अपने प्रभाव क्षेत्रों में रोककर अपने विकास विरोधी चरित्र का प्रमाण दिया है। जमीनी सच्चाई तो यह भी है कि यही नक्सल–माओवादी गुट जो संसदीय लोकतंत्र के विरोध का स्वांग रचते हैं चुनावों में उम्मीदवार जीताने का काम करते हैं। राजनीतिज्ञ–माओवादी गठबंधन से भी इंकार नहीं किया जा सकता है। राजनीतिक दृढ़ इच्छाशक्ति की कमी के कारण ये देश की सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती बन गये हैं तथा सरकार द्वारा कड़े कदम ना उठाये जाने के कारण इनका प्रभाव बढ़ता जा रहा है।

अलोकतांत्रिक एवं तानाशाही चरित्र

अपने चरित्र के अनुरूप कांग्रेस ने पिछले तीन वर्षों में अत्यंत अलोकतांत्रिक एवं तानाशाही रवैया अपनाया है। राष्ट्रवादी उत्साह एवं उमंग से भरे हजारों युवा जो राष्ट्रीय एकता यात्रा में शामिल हो श्रीनगर के लालचौक में तिरंगा फहराने

को कटिबद्ध थे, उन्हें अलोकतांत्रिक तरीके से रोका गया। भारतीय जनता युवा मोर्चा ने कश्मीर में बढ़ते आतंकवाद के मद्देनजर देश के युवाओं से श्रीनगर के लालचौक में शामिल होने का आह्वान किया था। हजारों युवा कोलकाता से शुरू हुई इस यात्रा में शामिल हुए परन्तु उन्हें जम्मू–कश्मीर की सीमा पर जबरदस्ती रोक दिया गया। हजारों युवाओं को तिरंगा फहराने के उनके राष्ट्रीय दायित्व से वंचित कर दिया गया। दूसरा पैरा ठीक इसी तरह से बाबा रामदेव द्वारा कालेधन के विरूद्ध आयोजित धरने पर आधी रात को बर्बर तरीके से हमला किया गया। इस पुलिसिया हमले की भयावहता इसी बात से समझी जा सकती है कि महिलाओं और बच्चों को भी नहीं बख्शा गया, कई लोग भयंकर रूप से जख्मी हुए तथा एक महिला की जान तक चली गई। अन्ना हजारे जिन्होंने जनलोकपाल के जनसमर्थन के लिए आंदोलन की घोषणा की, गिरफ्तार कर लिए गये तथा तिहाड़ जेल में डाल दिए गये। इस कार्रवाई के विरूद्ध उमड़े जनाक्रोश के कारण सरकार को अन्ना हजारे को छोड़ना पड़ा। कांग्रेस नीत संप्रग सरकार ने जिस तरह से जनता की आवाज को दबाने एवं कुचलने का प्रयास किया है उससे वे दिन याद आ जाते हैं जब अत्यंत अलोकतांत्रिक एवं तानाशाही तरीके से देश पर आपातकाल थोपा गया था।

निष्कर्ष

उपर्युक्त चर्चित मुद्दों के इलावा ऐसे अनेक मुद्दे हैं जिन पर विस्तार से चर्चा करने की आवश्यकता है। लगता है कि पिछले तीन वर्षों में प्रमुख ढांचागत परियोजनाओं को दरकिनार किया गया है। राष्ट्रीय राजमार्गों, छह एम्स खोले जाने वाले और नदियों को एक–दूसरे से जोड़ने सम्बन्धी सभी ढांचागत परियोजनाओं की प्रगति या तो धीमी पड़ गई है या उन्हें ठण्डे बस्ते में डाल दिया गया है। संसद में आरटीआई बिल पारित होने के बावजूद भी सरकार में कहीं किसी संकल्प का अभाव ही दिखाई पड़ता है और ढांचागत विकास को उतनी गति मिल ही नहीं पाई जिसकी वास्तव में आवश्यकता थी। उच्च शिक्षा के मामले में भी भारत बहुत से विकासशील तथा विकसित देशों से वहीं पिछड़ा हुआ है, परन्तु कांग्रेस–नीत यूपीए सरकार में विश्वविद्यालयों और शैक्षिक संस्थानों का निर्माण करने और उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक उच्चस्तरीय बनाने की कोई मंशा दिखाई नहीं पड़ती है। शिक्षा का व्यापारीकरण पूरे जोर शोर से हो रहा है और विद्यार्थियों को भारी भरकम फीस चुकानी पड़ती है, जब समाज के आर्थिक और सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के मेधावी विद्यार्थियों के सामने कोई अवसर भी दिखाई नहीं पड़ते हैं। इसी प्रकार स्वास्थ्य क्षेत्र की दशा भी रूग्ण और बीमारी की हालत में है। दूसरी तरफ प्राइवेट सेक्टर स्वास्थ्य सेवाओं के व्यापारीकरण से फलता–फूलता जा रहा है, जिससे यह गरीबों की पहुंच से बाहर हो गया है। सरकारी सुविधाओं की हालत भयावह है और उसमें सुधार के संकेत भी नहीं मिलते हैं। आबादी का एक बहुत बड़ा भाग कुपोषण में दिन गुजर रहा है, जिसमें विशेष रूप से महिलाओं का एक बड़ा हिस्सा 'एनेमिक' से पीड़ित है।

कहा जाता है कि भारत वह राष्ट्र है जो दिन–ब–दिन युवा बन रहा है। युवाओं की बढ़ती हिस्सेदारी से माना जाता है कि इससे भारत जनसांख्यिक लाभ प्राप्त करने तक पहुंच गया है। परन्तु लगता है कि कांग्रेसनीत यूपीए सरकार इस तथ्य को भूल रही है और निरन्तर युवाओं की उपेक्षा होती जा रही है। इस जनसांख्यिकीय लाभ उठाने के लिए जिस इंफ्रास्ट्रक्चर की जरूरत है, वह लुप्त है और स्थिति यहां तक हो सकती है कि यदि राष्ट्र इन युवाओं का पालन–पोषण ठीक ढंग से नहीं कर पाया तो देश में अराजकता एवं अव्यवस्था न फैल जाएगी। देश की बेरोजगारी की हालत परम संकट में है। किसानों, युवाओं, विद्यार्थियों और महिलाओं के लिए अवसर अत्यंत सीमित हैं। समाज के इन वर्गों के लिए सरकार के पास कोई विशेष योजना नहीं है। उनकी हर तरह से उपेक्षा हो रही है।

कांग्रेस–नीत संप्रग सरकार के पास न तो 'विजन' है और न ही नेतृत्व, जिससे एक स्वाभिमानी देश का निर्माण हो सके। आज भारत एक आत्मविश्वासी राष्ट्र है, परन्तु विडम्बना यह है कि सरकार अपने कमजोर नेतृत्व और भ्रमित प्राथमिकताओं के आधार पर असुरक्षित है। राजनैतिक पंडितों और विशेषज्ञों का यह कहना एकदम सच है कि सरकार अपनी 'नीतिगत–पंगुता' से पीड़ित है। वह नीतियों का निर्माण ही नहीं कर पाती है जिससे भारत पूरे विश्वास से विकास और समृद्धि की दिशा में बढ़ सके। यही नहीं, केवल बात 'नीतिगत–पंगुता' की ही नहीं है, बल्कि उसकी वोट बैंक प्राथमिकताओं की मंशा और गलत धारणाओं के कारण उसके सामने कभी भी अपनी योजनाओं में राष्ट्र को सर्वप्रथम स्थान पर नहीं रखा जाता है, बल्कि वह तो 'पावर पॉलिटिक्स', क्षीण दूरदृष्टि और भारतीय संस्कृति, परम्पराओं और आकांक्षाओं की गलत समझ लेकर आगे चलने में विश्वास रखती है।

कांग्रेस–नीत यूपीए अधिकांशतः धोखाधड़ी, छलकपट और विश्वासघाती नीतियों पर भरोसा रख कर लोगों को बेवकूफ बनाना चाहती है, परन्तु अब लोगों ने पलटकर इसका जवाब देना शुरू कर दिया है। हाल के चुनावों में, कांग्रेस को करारी हार का सामना करना पड़ा और यह कहना गलत नहीं होगा कि उसके दिन अब गिने–चुने ही रह गए हैं। ■

कांग्रेस–नीत यूपीए अफ्रिकांशतः फ्रोखाफ्राड़ी, छलकपट और विश्वासघाती नीतियों पर भरोसा रख कर लोगों को बेवकूफ बनाना चाहती है, परन्तु अब लोगों ने पलटकर इसका जवाब देना शुरू कर दिया है।

प्रासंगिक है शिवाजी का सुराज : मोहन भागवत

jk ष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत ने कहा है कि चार सौ साल बाद आज इस देश को शिवाजी की ज्यादा जरूरत है। आज की परिस्थितियां भी तब की परिस्थिति जैसी ही विषम हैं। समाज को बेहतर रूप से चलाने के लिए केवल नेताओं से ही काम नहीं चलेगा। कार्यकर्ता भी उतना ही अच्छा चाहिए। इसके साथ ही अनुकूलता वाला तंत्र भी चाहिए। ये सभी होने पर ही देश का भाग्य बदला जा सकता है। लेकिन समय के साथ नहीं बदले तो टिकेंगे नहीं।

शिवाजी को राजा बनने की इच्छा नहीं थी। उन्हें प्रेरित किया गया। वे सत्ताभोगी नहीं बनना चाहते थे। उनमें भय, अहंकार, स्वार्थ नहीं था। शिवाजी अच्छे शासक इसलिए साबित हुए क्योंकि वे समाज के बीच रहते थे। वे लोगों का दुख–दर्द जानते थे। इसीलिए, इतने साल बाद भी उनके शासन की प्रेरणा चली आ रही है। यह आज के नेताओं को समझने की जरूरत है।

श्री भागवत, छत्रपति शिवाजी और उनके राजकाज पर राज्यसभा सांसद श्री अनिल माधव दवे की पुस्तक के विमोचन के अवसर पर बोल रहे थे। पुस्तक का शीर्षक है – शिवाजी व सुराज। लेखक ने शिवाजी के शासन के विभिन्न पहलुओं को वर्तमान संदर्भ में रखकर विषय को प्रस्तुत किया है।

पुस्तक की प्रस्तावना गुजरात के मुख्यमंत्री, श्री नरेन्द्र मोदी ने लिखी है। पूर्व केन्द्रीय मंत्री, श्री सुरेश प्रभु भी इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे। समारोह में पूर्व उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी, विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज, पूर्व केंद्रीय मंत्री डा. मुरली मनोहर जोशी, श्री रविशंकर प्रसाद, मध्यप्रदेश भाजपाध्यक्ष श्री प्रभात झा, मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्री सुंदरलाल पटवा एवं श्री बाबूलाल गौर, ऊर्जा मंत्री श्री राजेंद्र शुक्ला एवं कई संसद सदस्य आदि उपस्थित थे।■

भाजपा श्देश कार्यकारिणी बैठक

'पंजाब की शांति से कोई समझौता नहीं'

Hkkरतीय जनता पार्टी पंजाब प्रदेश की दो दिवसीय कार्यकारिणी बैठक 6 एवं 7 मई 2012 को लुधियाना में आयोजित हुई। बैठक में तय किया गया कि पार्टी पंजाब में अमन व शांति को लेकर किसी तरह का समझौता नहीं करेगी। पार्टी आतंकवाद के खिलाफ है। प्रदेश में किसी को माहौल खराब नहीं करने दिया जाएगा। इस अवसर पर राजनीतिक प्रस्ताव पारित किए गए।

भाजपा पंजाब प्रदेश प्रभारी सर्वश्री शांता कुमार, प्रदेश सह प्रभारी कैप्टन अभिमन्यु, प्रदेश अध्यक्ष अश्विनी शर्मा, प्रदेश महामंत्री कमल शर्मा व स्थानीय निकाय मंत्री चूनी लाल ने सराभा नगर स्थित रोटरी भवन में संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यसमिति की बैठक की शुरुआत की। बैठक में आने वाले वर्षों में प्रदेश में पार्टी की राजनीतिक दिशा व उसका भविष्य बेहतर बनाने पर गंभीर चर्चा हुई। आगामी नगर निगम चुनावों में जीत हासिल करने की रणनीति पर भी चर्चा की गई। पार्टी नेताओं ने कहा कि विधानसभा चुनाव में जनता ने कांग्रेसियों की नकारात्मक बयानबाजी को नकार गठबंधन द्वारा करवाए गए विकास पर अपनी मुहर लगाई है।

भाजपा पंजाब प्रदेश प्रभारी श्री शांता कुमार ने कहा कि दोबारा सत्ता में आने पर अब सभी की जिम्मेदारी और बढ़ गई है। नगर निगम व नगर कौंसिल के चुनाव सिर पर हैं तथा ऐसे में कार्यकर्ता घरों में बैठने के बजाय जोश के साथ जनता के बीच जाएं और उनके काम करवाएं। अब नगर निगमों व कौंसिलों के चुनावों में भी इतिहास रचना है। प्रदेश भाजपाध्यक्ष श्री अश्विनी शर्मा ने कहा कि पंजाब की जनता ने गठबंधन पर विश्वास जताकर परंपरा को बदला है तथा ऐसे में जनता का विश्वास बनाए रखना जरूरी है। कार्यकर्ताओं सभी मतभेद, गुटबाजी भुलाकर चुनावों में पार्टी को जिताने के लिए काम करें। स्थानीय निकाय मंत्री भगत चूनी लाल ने कहा कि विकास कार्यों के लिए फंड की कमी नहीं आने दी जाएगी। जल्द ही निगम चुनावों की तारीख की घोषित हो सकती है इसके लिए कार्यकर्ता तैयार रहें। ■

देश की खस्ता हालत के लिए संप्रग सरकार जिम्मेदार : नितिन गडकरी

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने देश की खस्ता हालत के लिए कांग्रेस नेतृत्व वाली केंद्रीय सप्रंग सरकार को जिम्मेवार ठहराया है। गत 7 मई को बद्दोवाल (लुधियाना) के निकट एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि विदेशी निवेश बंद हो गया है, डालर की

तुलना में रुपये का अवमूल्यन हो रहा है। महंगाई आसमान को छू रही है, गरीब आदमी खाने को तरस रहा है और किसान आत्महत्याएं कर रहा है।

उनके अनुसार 85 हजार करोड़ रुपये मूल्य का अनाज देश के गोदामों में सड़ रहा है और 18 हजार करोड़ रुपये का अनाज सड़ कर नष्ट हो गया था। सभी हवाई कम्पनियां नाजुक आर्थिक परिस्थितियों से गुजर रही हैं, उद्योग बंद हो रहे हैं, बेरोजगारी बढ़ रही है और विकास दर गिर रही है। उन्होंने ऐसी सभी परिस्थितियों के लिए कुशासन और भ्रष्टाचार को जिम्मेवार ठहराया।

श्री गडकरी ने कहा कि एक जैसी परिस्थितियां होने के बावजूद चीन हम से आगे निकल गया है। उद्योगपति बिजली के अभाव के कारण परेशान हैं। उन्होंने कहा कि जिन लोगों को देश में सत्ता सौंपी है, वह देश को लूट रहे हैं। उन्होंने कहा कि क्या भारत विश्व के अग्रणी देशों में नहीं आ सकता। ऐसा बनाने के लिए प्रयास क्यों नहीं हो रहे। उनका कहना था कि देश की तसवीर बदलने की जरूरत है। उन्होंने अपने भाषण में कई बार श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व वाली एन.डी.ए. सरकार की उपलब्धियों की तुलना सप्रंग सरकार की नीतियों से भी की।

श्री गडकरी ने कहा कि जिन राज्यों में एन.डी.ए. या भारतीय जनता पार्टी की सरकारें हैं, उनका विकास कांग्रेस शासित राज्यों की तुलना में कहीं ज्यादा हुआ है। इसके लिए उन्होंने उक्त राज्यों द्वारा दिये जा रहे सुशासन और जन समर्थित विकास नीतियों को सराहा।

उन्होंने इस आरोप को निराधार बताया कि भाजपा एक साम्प्रदायिक और जातिवादी दल है। उन्होंने कहा कि गोवा में गत माह हुए चुनावों में भारतीय जनता पार्टी के जो 27 प्रत्याशी जीते हैं, उनमें से 9 ईसाई मत के हैं। उन्होंने कहा, 'हम सशक्त देश निर्माण के लिए सभी धर्मों व जातियों के लोगों को साथ लेकर चलने में विश्वास रखते हैं।' उन्होंने कहा कि भाजपा ने कभी भी जातिवाद की राजनीति नहीं की।

श्री गडकरी ने अपने भाषण में अशंका व्यक्त की है कि देश की आर्थिक परिस्थितियों के दृष्टिगत ऐसी स्थिति पैदा हो रही है, जब देश को पुनः अपना सोना विदेशों में गिरवी रखना पड़े। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचारियों का दूल्हा पूर्व केंद्रीय संचार मंत्री राजा है और कई अन्य मंत्री भी उसकी बारात में शामिल हैं।

उन्होंने भाजपा कार्यकर्ताओं को आह्वान किया कि वह आगामी लोकसभा चुनावों में पंजाब की सभी 13 सीटों पर अकाली–भाजपा प्रत्याशियों को सफल बनायें। उन्होंने कहा कि प्रत्याशी चाहे अकाली दल का हो या भाजपा का वह जीतना ही चाहिए। उन्होंने दावा किया कि केंद्र में अगली सरकार अकाली–भाजपा की ही होगी।

पंजाब में अकाली–भाजपा गठबंधन को पुनः सत्ता में आने पर भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष ने मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल के विनम्र स्वभाव और कार्यकर्ताओं के अनथक परिश्रम को श्रेय दिया।

उन्होंने कहा कि कांग्रेसी नेता अहंकार में थे। सम्मेलन को सम्बोधित करने वालों में हिमाचल के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पंजाब के प्रभारी सर्वश्री शांता कुमार, सह प्रभारी एवं सांसद जयप्रकाश नड्डा, पूर्व मंत्री मनोरंजन कालिया, तीक्ष्ण सूद, सांसद अविनाश राय खन्ना, संगठन मंत्री अजय जम्वाल, भाजपा पंजाब प्रदेश अध्यक्ष श्री अश्वनी शर्मा शामिल थे। ■

बुनकरों की बुरी हालत के लिए संप्रग सरकार जिम्मेदार : नितिन गडकरी

यह स्पष्ट है कि देश में बुनकरों और कारीगरों की स्थिति बहुत ही बदतर हो चुकी है। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से भारतीय समाज में हाशिया पर जा चुके इस वर्ग की बात को आवाज देने के लिए भारतीय जनता पार्टी ने बुनकर और शिल्पकार प्रकोष्ठ का गठन किया है। इस प्रकोष्ठ के माध्यम से बुनकर और शिल्पकार समाज की दिक्कतों, परेशानियों को समझने की कोशिश पिछल कई महीनों से की जा रही है। इसी मुहिम के तहत 8 मई, 2012 को बुनकरों की समस्या को केंद्र में रखकर दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में बुनकर समर शंखनाद महासम्मेलन का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में देशभर से करीब 3000 से अधिक बुनकरों ने हिस्सा लिया।

कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश, आंध्र प्रदेश, बंगाल, बिहार, असम, झारखंड, गुजरात और छत्तीसगढ़ से काफी संख्या में बुनकरों ने हिस्सा लिया। बुनकरों को सम्बोधित करते हुए भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने कहा कि हिन्दुस्तान दुनिया का सबसे बड़ा कपड़ा निर्मित करने वाला देश है। इसके बावजूद हमारे देश में बुनकरों की हालत ठीक नहीं है। हालात इतनी खराब है कि किसानों के बाद अब बुनकरों ने आत्महत्या की राह पकड़ ली है। श्री नितिन गडकरी ने कहा कि बुनकरों की इस हालत के लिए केन्द्र की यूपीए सरकार जिम्मेदार है।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन गडकरी ने कहा कि भाजपा ने यह कार्यक्रम इसलिए किया कि हमें बुनकर, कारीगर, मछुआरे जैसे क्षेत्र में काम करने वालों की बिगड़ती हालत की चिंता है। नितिन गडकरी ने बुनकरों से वादा किया कि केन्द्र में भाजपा की सरकार बनती है तो बुनकरों, कारीगरों को सस्ती दर पर कर्ज उपलब्ध कराया जाएगा। गडकरी ने कहा कि भाजपा की सरकार आने पर बुनकर–कारीगर मंत्रालय का गठन किया जाएगा। यह मंत्रालय कपड़ा मंत्रालय से अलग होगा। पार्टी के विजन डॉक्यूमेंट में हम 10 करोड़ हथकरघा बुनकरों को रोजगार देने की योजना बना रहे हैं। भाजपा के राष्ट्रीय सचिव और बुनकर प्रकोष्ठ के प्रभारी श्री मुरलीधर राव ने कहा कि एक दिन जो बुनकर दुनिया का सबसे अच्छा कपड़ा बनाते थे वो आज महानगरों में मनरेगा में मजदूरी कर रहे हैं। बुनकरों की ये हालत यूपीए सरकार की नीतियों की देन है।

श्री मुरलीधर राव ने बुनकरों की आत्महत्या को लेकर तीन दिन का अनशन हैदराबाद में किये थे। उन्होंने कहा कि यूपीए सरकार की नीतियां बुनकरी के पूरे व्यवसाय को तहस–नहस कर रही है।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री रामलाल ने बुनकरों को संघर्ष का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी बुनकरों के हर संघर्ष उनके साथ खड़ी रहेगी।

कार्यक्रम में बुनकरों की मांगों को लेकर भारतीय जनता पार्टी ने एक दिल्ली चार्टर जारी किया। इस चार्टर में बुनकरों की मांगों को शामिल किया गया है। कार्यक्रम में भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव सर्वश्री धर्मेंद्र प्रधान, पार्टी प्रवक्ता शहनवाज हुसैन, मोर्चा एवं प्रकोष्ठ समायोजक महेन्द्र पाण्डे, उत्तर प्रदेश पार्टी अध्यक्ष लक्ष्मीकांत वाजपेयी ने भी हिस्सा लिया। बुनकरी और कारीगरीकारी के क्षेत्र में भारत की पुरानी विरासत है। बुनकरी और कारीगरी इस देश में खेती और मछली पालन के बाद सबसे बड़े व्यवसाय के साधन हैं। देश में आज भी 25 लाख से भी अधिक हथकरघे हैं। बुनकरी एक समुदाय आधारित, कौशलपूर्ण, विकेंद्रित कुटीर उद्योग है। बुनकरी के महत्व को पहचानते हुए गांधी जी ने चरखे को आजादी के आंदोलन के एक प्रतीक के रूप में स्वीकार किया था। लेकिन आज उसी बुनकरी से जुड़े किसान देश के विभिन्न हिस्सों में आत्महत्या कर रहे हैं।

किसानों की आत्महत्या की बात मीडिया तक पहुंची है लेकिन बुनकरों की आत्महत्या की बात अब तक दिल्ली की मीडिया तक नहीं पहुंची है। सिर्फ आंध्र प्रदेश में अब तक 700 बुनकर आत्महत्या कर चुके हैं। जिसकी वजह है– स्थाई काम का न होना, काम का उचित दाम न मिलना, उधारी, सरकारी अनदेखी, सरकारी भुगतान ठीक से न होना और कुपोषण।

इस सारे मामले को ध्यान में रखते हुए भारतीय जनता पार्टी ने पिछले कुछ समय से इस मुद्दे को विभिन्न स्तर पर उठाने की कोशिश की है। पार्टी कार्यकर्ताओं ने बुनकरों के दर्जनों संकुलों (क्लस्टर) में जाकर बैठकें की, उनकी समस्याओं को सीधे समझने की कोशिश की, अध्ययन किया और बड़ी संख्या में बुनकरों से मिले। ■

'अटल स्कूल यूनीफॉर्म योजना' का शुभारम्भ

'यूपीए सरकार को उखाड़ फेंकें जनता'

गत 9 मई 2012 को नाहन स्थित ऐतिहासिक चौगान मैदान में आयोजित राज्यस्तरीय कार्यक्रम में करीब दस हजार लोगों की उपस्थिति में भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी तथा मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने हिमाचल प्रदेश सरकार की महत्वाकांक्षी 'अटल स्कूल यूनीफॉर्म योजना' का शुभारम्भ किया।

श्री गडकरी ने इस अवसर पर विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए शिक्षा को विशेष प्राथमिकता प्रदान करने, विशेषकर नवीन एवं महत्वाकांक्षी अटल स्कूल यूनीफार्म योजना आरंभ करने के लिए प्रदेश सरकार की सराहना की वहीं केन्द्र की यूपीए सरकार पर वह जम कर बरसे। उन्होंने कहा कि यूपीए की गलत नीतियों तथा भ्रष्टाचार ने देश को बर्बाद करके रख दिया है। उन्होंने देशवासियों से अपील की कि भ्रष्ट यूपीए को देश के हर कोने से उखाड़ फेंके।

भाजपा कार्यकर्ताओं को मिशन 2014 में जुट जाने का आह्वान करते हुए श्री गडकरी ने कहा कि आज देश की जनता भाजपा की ओर देख रही है। भाजपा ही एक मात्र ऐसा विकल्प है जो देश का भाग्य बदलने की ताकत रखता है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने कहा कि उक्त योजना के तहत सरकारी स्कूलों में पहली से दसवीं कक्षा तक के सभी विद्यार्थियों को वर्ष में दो बार निःशुल्क यूनीफॉर्म दी जाएगी। इस पर 64 करोड़ रुपये वार्षिक व्यय होंगे। इस योजना के अंतर्गत प्रदेश सरकार यूनीफॉर्म की सिलाई के लिए प्रत्येक विद्यार्थी को हर बार 100 रुपये भी देगी। प्रदेश सरकार द्वारा आरंभ की गयी यह महत्वाकांक्षी योजना देश में अनूठी है। इस योजना से वर्तमान में 927205 से अधिक विद्यार्थी, जिनमें 463680 लड़के तथा 463525 लड़कियां लाभान्वित होंगी। इस यूनीफॉर्म को राजकीय इंजीनियरिंग कॉलेज सुन्दरनगर के टैक्सटाइल विभाग द्वारा डिजाइन किया गया है।

इस मौके पर भाजपा के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष, सांसद तथा पूर्व मुख्यमंत्री श्री शांता कुमार ने मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल को स्कूली बच्चों के लिए इस योजना को आरंभ करने के लिए बधाई दी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि राज्य में भाजपा लगातार दूसरी बार सत्ता में आकर इतिहास बनायेगी।

इस मौके पर शिक्षा मंत्री सर्वश्री आईडी धीमान, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष सतपाल सिंह सत्ती, मुख्य संसदीय सचिव सुखराम चौधरी तथा हिमाचल प्रदेश राज्य सहकारी बैंक के अध्यक्ष चन्द्रमोहन ठाकुर ने नितिन गडकरी एवं अन्य का स्वागत किया। इस मौके पर प्रदेश भाजपा प्रभारी कलराज मिश्रा, हिमाचल प्रदेश भाजपा के सह प्रभारी श्याम जाजू, भाजपा के राष्ट्रीय महासचिव जेपी नड्डा, लोक निर्माण मंत्री गुलाब सिंह ठाकुर, सिंचाई एवं जनस्वास्थ्य मंत्री रविन्द्र रवि, विधायकगण, विभिन्न बोर्डों एवं निगमों के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्षों समेत कई लोग उपस्थित थे। ■

सुशासन, संगठन एवं संघर्ष पर बल देने का संकल्प

Hkkरतीय जनता पार्टी, बिहार प्रदेश की दो दिवसीय कार्यकारिणी बैठक बरौनी में 5 एवं 6 मई 2012 को संपन्न हुई। इस बैठक में नए व बेहतर बिहार बनाने को लेकर सुशासन, संगठन एवं संघर्ष पर बल देने का संकल्प, लिया गया। बैठक के पहले दिन भाजपा नेताओं ने जहां राज्य की एनडीए सरकार की उपलब्धियों का जिक्र किया वहीं केंद्र सरकार को सभी मोर्चे पर विफल करार दिया। बैठक सभागार का नाम राष्ट्रकवि दिनकर नगर रखा गया था। भाजपा राष्ट्रीय महामंत्री व बिहार प्रदेश भाजपा प्रभारी श्री अनंत कुमार, राष्ट्रीय महासचिव व बिहार प्रदेश भाजपा सह प्रभारी श्री धर्मेंद्र प्रधान, उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी और प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सीपी ठाकुर ने दीप प्रज्जवलित कर बैठक का उद्घाटन किया।

भाजपा राष्ट्रीय महासचिव श्री अनंत कुमार ने कहा कि राज्य का लगातार विकास हो रहा है। 14 प्रतिशत विकास दर हासिल कर बिहार देश का नंबर–1 राज्य बन गया है। बिहार में हो रहे विकास का श्रेय एनडीए के नेताओं व कार्यकर्ताओं को जाता है। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार बिहार के साथ न्याय नहीं कर रही है। केंद्र के इस रवैये के खिलाफ उन्होंने संघर्ष की घोषणा भी की। उन्होंने कहा कि केंद्र के खिलाफ हमारा संघर्ष चलेगा और हम सड़क से लेकर संसद तक बिहार के हक के लिए लड़ेंगे। उन्होंने कहा कि पार्टी के कार्यकर्ता गांवों में जाकर बताएं कि बिजली, सड़क, उद्योग धंधे आदि के क्षेत्र में केंद्र सरकार ने पिछले सात सालों में क्या किया है। बिजली की कमी के लिए उन्होंने केंद्र को जिम्मेवार ठहराया और कहा कि यहां हो रहे बिजली उत्पादन का 50 प्रतिशत हमें मिलना चाहिए, परंतु केंद्र सरकार सिर्फ 6.6 प्रतिशत बिजली ही हमें दे रही है। राज्य में करीब डेढ़ करोड़ बीपीएल परिवार हैं। लेकिन, केंद्र सरकार सिर्फ 65 लाख लोगों के लिए ही खाद्यान्न व किरासन तेल दे रही है। दिल्ली में बीपीएल परिवार को प्रति माह 22 लीटर किरासन तेल दिया जाता है। बिहार में यह मात्रा ढाई से पौने तीन लीटर है।

उप मुख्यमंत्री श्री सुशील कुमार मोदी ने बिहार को विशेष राज्य का देने की मांग दोहराई। उन्होंने कहा कि केंद्र का सहयोग मिले, तो वे बिहार के विभिन्न क्षेत्रों के साथ बेगूसराय के बरौनी में पांच सौ मेगावाट बिजली घर लगाना चाहते हैं। मोतिहारी में केंद्रीय विवि के मुद्दे पर उन्होंने केंद्र सरकार पर बिहार के लोगों को आपस में लड़ाने की साजिश का आरोप लगाया।

प्रदेश अध्यक्ष डॉ. सी.पी. ठाकुर ने एनडीए के शासन में नए, बढ़िया व बेहतर बिहार बनाने का संकल्प दोहराया। बैठक में बिहार को विशेष राज्य का दर्जा सहित अन्य मुद्दों पर रणनीति बनाने की बात कही। बैठक में राष्ट्रीय सह महामंत्री (संगठन) सर्वश्री सौदान सिंह, प्रदेश महामंत्री (संगठन) नागेन्द्र जी, सांसद राधा मोहन सिंह, डॉ. भोला सिंह, राज्य सरकार के मंत्री नंद किशोर यादव, चन्द्रमोहन राय, गिरिराज सिंह, विधान पार्षद रजनीश कुमार, विधायक ललन कुंवर, सुरेन्द्र मेहता, रामानंद राम सहित अन्य नेता उपस्थित थे।

बैठक के दूसरे दिन भाजपा राष्ट्रीय महासचिव व बिहार प्रदेश भाजपा सह प्रभारी श्री धर्मेन्द्र प्रधान ने कहा कि कांग्रेस की गलत नीतियों के कारण न सिर्फ बिहार, बल्कि देश के अन्य गैर कांग्रेसी राज्य के लोगों में भी आक्रोश है। ताजा उदाहरण केंद्र द्वारा एनसीटीसी के मुद्दे पर आयोजित मुख्यमंत्रियों की बैठक है। इसमें गैर कांग्रेसी मुख्यमंत्रियों ने एक साथ विरोध दर्ज किया। अब इस आक्रोश का नेतृत्व बिहार करेगा। आने वाले समय में बिहार गैर– कांग्रेसी राजनीति का केंद्र बनेगा। विकास के मुद्दे को ले कांग्रेस की गलत नीति की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि बिहार में श्रीबाबू के बाद अधिकांश अवधि में राजनीतिक अस्थिरता रही है। अब बिहार में राजनीतिक स्थिरता आई है तो केंद्र विकास में सहयोग नहीं कर रहा है। ■